कीमत 5 रूपया

http://www.cgpi.org

आने वाले इंक़लाबी तूफ़ानों के लिये तैयारी करें!

मज़दूर एकता लहर

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का अख़बार

ग्रंथ–35, अंक – 15 | अगस्त 1–15, 2021 | पाक्षिक अख़बार | कुल पृष्ठ–10

उदारीकरण और निजीकरण के कार्यक्रम की शुरूआत के 30 साल बाद

तीस साल पहले 24 जुलाई को तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने कांग्रेस पार्टी की अगुवाई में, नरसिम्हा राव के नेतृत्व वाली सरकार का पहला बजट पेश किया था। वह सरकार 10वीं लोकसभा के चुनाव के बाद बनी थी, इसी दौरान पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या कर दी गई थी।

वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने उस समय घोषणा की थी कि भुगतान–संतुलन (बैलेंस ऑफ पेमेंट्स) की स्थिति अनिश्चित है और हिन्दोस्तान का विदेशी मुद्रा का भंडार एक महीने के आयात का भुगतान करने के लिए भी पर्याप्त नहीं है। उन्होंने कहा कि बहुत अधिक स्तर के कर्ज़ और ब्याज भुगतान की ज़रूरत के कारण, केंद्र सरकार की वित्तीय स्थिति संकट में है, उन्होंने घोषणा की कि "हमने आज़ाद हिन्दोस्तान के इतिहास में ऐसी स्थिति का सामना पहले कभी नहीं किया है"। इसके बाद उन्होंने व्यापार, निवेश और सार्वजनिक क्षेत्र से संबंधित नीतियों, कानूनों और नियमों में बड़े बदलावों के एक कार्यक्रम का अनावरण किया, जो मोटे तौर पर विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) के नुस्खे के अनुरूप था।

1991 में शुरू किए गए इस कार्यक्रम की 30वीं वर्षगांठ, हमारे लिए उन हालातों को पीछे मुड़कर देखने और अब तक के अनुभव का विश्लेषण करने का एक अवसर प्रदान करती है। इसकी शुरुआत क्यों की गई थी? यह किसके हित में शुरू किया गया था? पिछले तीन दशकों में उदारीकरण और निजीकरण के कार्यक्रम का किसे फ़ायदा हुआ है और किसे नुक़सान हुआ है?

क्यों और किसके हित में?

1947 में उपनिवेशवादी शासन की समाप्ति के बाद से हमारे देश के आर्थिक विकास का एजेंडा, सबसे अमीर पूंजीवादी घरानों द्वारा निर्धारित किया जाता रहा है। 1950 के दशक में अपनाया गया नीतिगत ढांचा, उस समय देश और विश्व स्तर पर मौजूद परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, टाटा, बिड़ला और अन्य बड़े पूंजीवादी घरानों द्वारा तैयार किया गया था।

सत्ता के हस्तांतरण से कुछ साल पहले, टाटा, बिड़ला और अन्य बड़े औद्योगिक घरानों ने उपनिवेशवादी सत्ता के हस्तांतरण के बाद हिन्दोस्तान में पूंजीवाद के विकास के लिए उपयुक्त नीति और योजना तैयार की थी। इसे बॉम्बे प्लान का नाम दिया गया और यह योजना 1944–45 में दो खंडों में प्रकाशित की गयी थी। यह योजना, जिसको आमतौर पर "टाटा–बिड़ला प्लान" के रूप में जाना जाता है, आज़ाद हिन्दोस्तान की पहली तीन पंचवर्षीय योजनाओं का आधार थी।

1950 के दशक में विश्व स्तर पर क्रांति की परिस्थितियां परिपक्व थीं। हिन्दोस्तान सहित नए आज़ाद हुये सभी देशों में, अधिकांश लोगों के दिलों में समाजवादी व्यवस्था हासिल करने की तमन्ना थी। ऐसी परिस्थितियों में नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी की सरकार ने हिन्दोस्तान में "समाजवादी नमूने के समाज" के निर्माण के लिए टाटा–बिड़ला योजना को एक परियोजना के रूप में पेश किया।

जब बर्तानवी शासन का अंत हुआ था, उस समय हिन्दोस्तानी पूंजीपतियों के सबसे अमीर तबके के पास भी, औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक भारी उद्योगों, ऊर्जा और अन्य बुनियादी ढांचे में निवेश करने के लिए पर्याप्त पूंजी नहीं थी। उन्होंने फ़ैसला किया कि ऐसे उद्योगों में निवेश करने के लिए केंद्र सरकार को टैक्स और उधार के माध्यम से वित्तीय संसाधन जुटाने चाहिएं। निर्मित उपभोक्ता वस्तुओं और यातायात के वाहनों के घरेलू बाज़ार पर अपना वर्चस्व जमाने के लिए उन्हें वक्त चाहिए था। इसीलिए हिन्दोस्तान के बड़े पूंजीपति चाहते थे कि सरकार इन क्षेत्रों में विदेशी निवेश और इस तरह की उपभोक्ता वस्तुओं के आयात को प्रतिबंधित करने की नीति अपनाए। वे चाहते थे कि राज्य आयात और निवेश के लिए लाइसेंसों को विनियमित करे, ताकि वे अपने राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करके ऐसे लाइसेंसों पर अपना एकाधिकार जमा सकें। बड़े औद्योगिक घरानों की इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही बॉम्बे प्लान को तैयार किया गया था।

1950 के दशक में विश्व स्तर पर क्रांति की परिस्थितियां परिपक्व थीं। हिन्दोस्तान सहित नए आज़ाद हुये सभी देशों में, अधिकांश लोगों के दिलों में समाजवादी व्यवस्था हासिल करने की तमन्ना थी। ऐसी परिस्थितियों में नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी की सरकार ने हिन्दोस्तान में "समाजवादी नमूने के समाज" के निर्माण के लिए टाटा–बिड़ला योजना को एक परियोजना के रूप में पेश किया।

शेष पृष्ठ 2 पर

आवश्यक रक्षा सेवा अध्यादेश के ख़िलाफ़ देशभर में प्रदर्शन

23 जुलाई को आवश्यक रक्षा सेवा अध्यादेश–2021 (ई. डी. एस. ओ.) के विरोध में देशभर में ट्रेड यूनियनों और श्रमिक संगठनों ने प्रदर्शन आयोजित किये।

आयुध निर्माण बोर्ड (ऑर्डनेन्स फैक्ट्री बोर्ड) का निगमीकरण करने की सरकार की योजनाओं के ख़िलाफ़ रक्षा क्षेत्र के मज़दूरों द्वारा की जाने वाली अनिश्चितकालीन हड़ताल के नोटिस के मद्देनज़र, 30 जून को इस अध्यादेश (ई.डी.एस.ओ.–2021) को लागू किया गया था। यह अध्यादेश केंद्र सरकार को रक्षा उपकरणों के उत्पादन, सेवाओं, रखरखाव और रक्षा प्रतिष्ठानों के संचालन में शामिल मज़दूरों द्वारा की जाने वाली हड़तालों को प्रतिबंधित करने का अधिकार देता है। यह अध्यादेश "आवश्यक रक्षा सेवाओं के कामकाज, सुरक्षा या रखरखाव" को सुनिश्चित करने के लिए पुलिस बल के इस्तेमाल की अनुमति देता है। यह अध्यादेश बिना किसी जांच के हड़ताल में भाग लेने वाले मज़दूरों को बर्खास्त करने का अधिकार प्रबंधन को देता है। अध्यादेश को एक कानून में बदलने के लिए 22 जुलाई को संसद में एक विधेयक पेश किया गया।

जंतर–मंतर पर प्रदर्शनकारी हाथों में विरोध के प्लेकार्ड लिए हुए

सभी आयुध कारखानों और अन्य रक्षा प्रतिष्ठानों के मज़दूरों ने अपने–अपने कार्यस्थलों पर विरोध प्रदर्शन आयोजित किए। राजस्थान, पंजाब, छत्तीसगढ़, केरल, तमिलनाडु सहित और कई अन्य राज्यों में सरकारी कर्मचारी और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के मज़दूर भी रक्षा कर्मचारियों के समर्थन में और हड़ताल के अधिकार पर हमले के विरोध में सामने आए।

नई दिल्ली में, ट्रेड यूनियनों और श्रमिक संगठनों ने संसद के पास जंतर–मंतर पर एक विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया – यह जगह उस स्थान से कुछ ही दूरी पर है, जहां पर किसान–विरोधी कानूनों के ख़िलाफ़ प्रदर्शनकारी किसान "किसान संसद" आयोजित कर रहे हैं। इस विरोध प्रदर्शन का आयोजन, सभी ट्रेड यूनियनों – एटक, सीटू, एच.एम.एस., ए.आई.यू.टी.यू.सी., ए.आई.सी.सी.टी.यू., यू.टी.यू.सी., सेवा, एल.पी.एफ., मज़दूर एकता कमेटी (एम.ई.सी.), आई.सी.टी.यू., इंटक और टी.यू.सी.सी. के बैनर तले संयुक्त रूप से किया गया था। "सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण को बंद करो!", "हड़ताल के अधिकार पर हमले की निंदा करो!", "असहमति के अधिकार पर हमलों का विरोध करो!", "श्रम संहिताओं को रद्द करो!" प्रदर्शनकारी ऐसे ही नारे लगा रहे थे और साथ ही प्रदर्शनकारियों के हाथों में इन्हीं नारों के प्लेकार्ड और बैनर भी थे। उन्होंने अपनी मांगों के समर्थन में जमकर नारेबाजी की।

प्रदर्शन के दौरान, वक्ताओं ने ई.डी.एस.ओ.–2021 और मज़दूरों के हड़ताल के अधिकार पर प्रत्यक्ष हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने रेलवे, रक्षा, बैंकों, दूरसंचार, बीमा

शेष पृष्ठ 10 पर

अंदर पढ़े

- क्यूबा में अराजकता फैलाने के लिये अमरीका की निंदा 3
- देशभर में बिजली मज़दूरों का प्रदर्शन व हड़ताल 4
- वी.आर.एस. के विरोध में सेंचुरी मिल मज़दूरों का प्रदर्शन 6
- तमिलनाडु में सफ़ाईकर्मी का बकाये वेतन के लिए संघर्ष 6
- मणिपुर के नर्सों की चेतावनी 6
- भारत संचार निगम लिमिटेड के निजीकरण का विरोध करें! 7

उदारीकरण और निजीकरण के 30 साल बाद

पृष्ठ 1 का शेष

राज्य द्वारा संचालित भारी उद्योगों के एक सार्वजनिक क्षेत्र के निर्माण के साथ–साथ, कृषि क्षेत्र में सीमित भूमि सुधार भी किए गए। 1960 के दशक में शासक वर्ग ने विश्व बैंक की तकनीकी सहायता के साथ पूंजीवादी और व्यवसायिक कृषि को बढ़ावा देने के लिए "हरित क्रांति" की शुरुआत की थी।

आज़ादी के बाद के प्रारंभिक दशकों में ही पूंजीवादी इजारेदार घरानों द्वारा निर्धारित एजेंडे के लागू किये जाने के परिणामस्वरूप, मज़दूरों और किसानों में भारी असंतोष फैल गया। एक तरफ सम्पत्ति कुछ गिने–चुने पूंजीपतियों के हाथों में ही जमा हो रही थी, दूसरी तरफ देश के मेहनतकश बहुसंख्यक लोग बेहद ग़रीब और उत्पीड़ित ही बने रहे।

1980 के दशक तक पहुंचते–पहुंचते देश में और विश्व स्तर पर परिस्थितियां कई मायनों में बहुत ही बदल चुकी थीं। 1950 के दशक में अपनाया गया नीतिगत ढांचा, अब पूंजीवादी इजारेदार घरानों की ज़रूरतों के लिए उपयुक्त नहीं था। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों के विस्तार के साथ–साथ, वाणिज्यिक कृषि के प्रसार के ज़रिये पूंजीपतियों की आकांक्षाओं को पूरा करने की क्षमता ख़त्म हो चुकी थी। सुरक्षात्मक आयात और निवेश की नीतियों ने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी थी जिसमें हिन्दोस्तान में निर्मित वस्तुएं विश्व बाज़ार में विदेशी वस्तुओं के साथ प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ थीं। हरित क्रांति को बढ़ावा देने वाले रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से और एक ही फ़सल पैदा करने की पद्धति से मिट्टी की उर्वरता में भी कमी हो गयी थी। उद्योग और कृषि दोनों ही ठहराव का सामना कर रहे थे, जबकि सरकार का घाटा और उधार नियंत्रण से बाहर हो रहा था।

1980 के दशक के दौरान बढ़ते साम्राज्यवादी दबाव में, जिसे विश्व बैंक के माध्यम से लागू किया गया था, घरेलू बाज़ार को खोलने और आयात व विदेशी पूंजी निवेश के लिए देश की आर्थिक व्यवस्था में उपयुक्त सुधार लाने के लिए हिन्दोस्तानी राज्य पर बहुत दबाव था। इन परिस्थितियों में, हिन्दोस्तानी सरकार ने धीरे–धीरे लाइसेंस की आवश्यकता के बिना अधिक से अधिक वस्तुओं को आयात करने की छूट दी और आयात शुल्क को धीरे–धीरे कम किया। थोड़ा–थोड़ा करके, रुपये को डॉलर के मुक़ाबले विनिमय मूल्य में कमज़ोर किया गया, जिससे हिन्दोस्तान से निर्यात अधिक प्रतिस्पर्धी हो गया।

टाटा, बिड़ला और अन्य पूंजीवादी घरानों ने विदेशी प्रतिस्पर्धा को प्रतिबंधित करके, घरेलू बाज़ार पर अपना नियंत्रण क़ायम किया था। 1980 के दशक के मध्य तक उन्होंने उन प्रतिबंधों को हटाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया, ताकि वे विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। हालांकि, वे हिन्दोस्तानी बाज़ार को बहुत तेज़ी से नहीं खोलना चाहते थे। वे विदेशी कंपनियों के हाथों, हिन्दोस्तानी बाज़ार में अपना दबदबा खोने के जोखिम से बचना चाहते थे। इसीलिए इस बदलाव के लिए पर्याप्त समय की मांग को लेकर हिन्दोस्तान की सरकार के प्रतिनिधियों ने विश्व बैंक के साथ बातचीत की। इस बदलाव की मौजूदा प्रक्रिया ने 1991 में विश्व स्तर पर अचानक हुए परिवर्तनों के अनुरूप अचानक बड़े परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया।

1991 में सोवियत संघ विघटन की ओर बढ़ रहा था। समाजवादी अल्बानिया सहित पूर्वी यूरोप के देश प्रतिक्रान्ति की लहरों का सामना कर रहे थे। अमरीका अपने साम्राज्यवादी सहयोगियों को एक अभूतपूर्व आक्रमण शुरू करने के लिए एकजुट कर रहा था, एक ऐसा आक्रमण जो न केवल समाजवाद के आदर्श के ख़िलाफ़ भी था, बल्कि उन सभी अधिकारों के ख़िलाफ़ था जो मज़दूर वर्ग और आम लोगों ने लंबे संघर्षों और कुर्बानियों के बाद जीते थे। विश्व स्तर पर क्रांति का ज्वार, प्रवाह से उतार की ओर मुड़ चला था।

दुनिया के दो–ध्रुवीय विभाजन की पूरी अवधि के दौरान, हिन्दोस्तानी शासकों ने सोवियत संघ के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों का इस्तेमाल, संयुक्त राज्य अमरीका और वैश्विक एजेंसियों के दबाव का विरोध करने के लिए एक प्रतित्तोलक भार के रूप में किया था। सोवियत संघ के पतन की ओर बढ़ने के साथ, हिन्दोस्तानी शासक वर्ग अब पहले की तरह चालाकी नहीं कर सकता था।

1980 के दशक के अंत तक, हिन्दोस्तान के विदेशी मुद्रा भंडार का स्तर एक ख़तरनाक स्तर पर पहुंच चुका था। इन परिस्थितियों में, हिन्दोस्तानी इजारेदार पूंजीपतियों ने 1991 में अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवादी दबाव के आगे घुटने टेक दिए। उन्होंने अपना रास्ता बदला और खुले तौर पर यह घोषणा करने के लिए सहमत हुए कि हिन्दोस्तान "समाजवादी नमूने के समाज" के पहले के दृष्टिकोण से अपना नाता तोड़ रहा है। टेक्नोक्रैट मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री बनाया गया। भुगतान संतुलन के संकट का इस्तेमाल करके, विश्व बैंक और आई.एम.एफ. द्वारा निर्धारित व्यापार और निवेश नीतियों में उपयुक्त सुधार शुरू करने की योजना की घोषणा करने की ज़िम्मेदारी मनमोहन सिंह को सौंपी गयी।

टाटा, अंबानी, बिरला, अदानी और अन्य इजारेदार पूंजीवादी घरानों ने वैश्विक बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी का विस्तार किया है और विदेशों में बड़े पैमाने पर निवेश किया है। उनमें से कुछ हमारे अपने देश की तुलना में विदेशों से अधिक मुनाफ़ा कमाते हैं। वैश्वीकरण का वास्तविक अर्थ और उद्देश्य अब सबको प्रत्यक्ष रूप से सामने दिख रहा है। यह एक तरफ, हिन्दोस्तानी इजारेदार घरानों की दुनिया के सबसे अमीर पूंजीपतियों की कतार में शामिल होने की मुहिम है, जबकि दूसरी तरफ हमारे देश के मज़दूर और किसान दुनिया के सबसे ग़रीब लोगों में गिने जाते हैं। यह इजारेदार पूंजीपतियों के लालच और उनके साम्राज्यवादी मंसूबों को पूरा करने के लिए देश और उसकी अर्थव्यवस्था को संकटग्रस्त विश्व साम्राज्यवादी व्यवस्था से और अधिक उलझाने का कार्यक्रम है।

हमारे देश में पूंजीवाद का विकास उस चरण में पहुंच चुका था जब हिन्दोस्तानी इजारेदार पूंजीवादी घरानों ने हमारे देश में विदेशी पूंजी के निवेश को अपने वैश्विक विस्तारवादी मंसूबों को हासिल करने में एक आवश्यक क़दम के रूप में देखना शुरू कर दिया था। विदेशी पूंजी के प्रति हिन्दोस्तानी इजारेदार पूंजीपतियों के दृष्टिकोण में इस बदलाव को दर्शाते हुए, मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा था कि, "औद्योगीकरण के लिए चार दशकों की योजना लागू करने के बाद, हम अब विकास के उस चरण में पहुंच गए हैं जहां हमें डर की बजाय विदेशी निवेश का स्वागत करना चाहिए।" उन्होंने घोषणा की कि अधिकांश क्षेत्रों में विदेशी निवेश के साथ–साथ बड़े पैमाने पर घरेलू निवेश के लिए अब लाइसेंस की आवश्यकता नहीं होगी।

मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में निजीकरण शब्द का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के पुनर्गठन की आवश्यकता के बारे में बात की ताकि उसके द्वारा और भी मुनाफ़ा बनाया जा सके। यह दिखाता है कि इजारेदार पूंजीवादी घराने, व्यापार और निवेश नीतियों को उदार बनाने के उपायों को लागू करने का फ़ैसला पहले ही कर चुके थे। उदारीकरण का मतलब था कि अब व्यवसाय शुरू करने के लिए लाइसेंस और परमिट की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने निजीकरण के कार्यक्रम को धीरे–धीरे और चुपके से आगे बढ़ाने का फ़ैसला किया।

30 साल के बाद नतीजे

मनमोहन सिंह द्वारा अनावरण किए गए कार्यक्रम को पिछले तीन दशकों में केंद्र और राज्यों की सत्ता में आयी सभी सरकारों द्वारा लगातार विकसित और कार्यान्वित किया गया है। नरसिम्हा राव की कांग्रेस पार्टी की सरकार के बाद देवेगौड़ा और इंदर कुमार गुजराल के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय मोर्चा सरकार बनी। फिर वाजपेयी के नेतृत्व वाली भाजपा की गठबंधन सरकार आई, मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेस गठबंधन की दो बार और अब नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार आई है। उदारीकरण और निजीकरण के माध्यम से वैश्वीकरण के कार्यक्रम को प्रत्येक सरकार ने न केवल विरासत में प्राप्त किया है बल्कि हर सरकार ने इस एजेंडा को और भी आगे बढ़ाया है।

रेलवे, बैंकिंग, कोयला, पेट्रोलियम, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं के निजीकरण से बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियों का नुकसान हुआ है, काम करने की हालतों में गिरावट आई है, कई सेवाओं की गुणवत्ता ख़राब हुई है और इन सभी सेवाओं की क़ीमतों में लगातार वृद्धि हुई है। हिन्दोस्तानी और अंतर्राष्ट्रीय इजारेदार कंपनियों के बढ़ते प्रभुत्व ने बड़ी संख्या में छोटे और मध्यम स्तर के उत्पादकों और व्यापारियों को नष्ट कर दिया है। हर साल, नए निवेश द्वारा सृजित नई नौकरियों की संख्या की तुलना में कहीं अधिक पुरानी नौकरियां ख़त्म हो जाती हैं। नतीजतन, कोरोना वायरस महामारी के शुरू होने से पहले ही, बेरोज़गारी 45 वर्षों में अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी। अस्थायी अनुबंधों पर श्रमिकों को काम पर रखना और उन्हें नौकरी की सुरक्षा और सेवानिवृत्ति के लाभों से वंचित करना, अब एक नियम बन गया है।

कृषि क्षेत्र में लगने वाली सभी वस्तुओं और इस क्षेत्र के उत्पादों के बाज़ारों को,

शेष पृष्ठ 5 पर

कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी का प्रकाशन

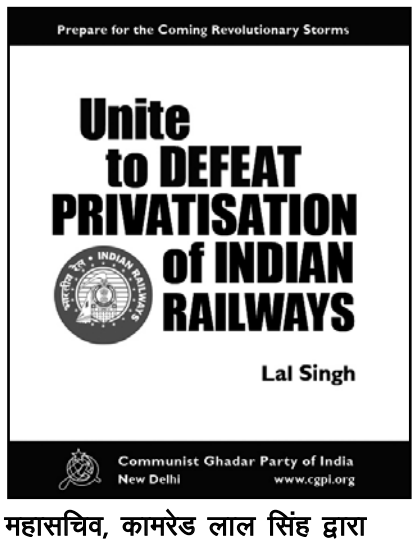

यह पुस्तिका कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के महासचिव, कामरेड लाल सिंह द्वारा 13 मई, 2018 को दिल्ली में पार्टी की एक सभा में प्रस्तुत की गई थी।

संपर्क : लोक आवाज़ पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फोन : 09810167911, मूल्य 20 रुपये

मज़दूर एकता लहर का वार्षिक शुल्क और अन्य प्रकाशनों का भुगतान आप बैंक खाते और पेटीएम में भेज सकते हैं

आप वार्षिक ग्राहकी शुल्क (150 रुपये) सीधे हमारे बैंक खाते में या पेटीएम क्यूआर कोड स्केन करके भेजें और भेजने की सूचना नीचे दिये फोन या वाट्सएप पर अवश्य दें।

खाता नाम–लोक आवाज़ पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स
बैंक ऑफ महाराष्ट्र, न्यू दिल्ली, कालका जी
खाता संख्या–20066800626, **ब्रांच नं.**–00974
IFSCode: MAHB0000974, मो.–9810187911
वाट्सएप और पेटीएम नं.-9868811998
email: mazdoorektalehar@gmail.com

क्यूबा में अराजकता व हिंसा फैलाने के अमरीकी साम्राज्यवाद के प्रयासों की निंदा करें

अमरीकी साम्राज्यवाद ने क्यूबा की सरकार का तख़्ता पलट करने के अपने प्रयासों को एक बार फिर तेज़ कर दिया है। इसका उद्देश्य क्यूबा के लोगों पर दुबारा से अपने नव औपनिवेशिक शासन को स्थापित करना है।

11 जुलाई को "मानवीय सहायता" और "अंतर्राष्ट्रीय सहायता" के लिए "मुक्त गलियारा" खोलने की मांग को लेकर क्यूबा के कई शहरों में एक साथ विरोध प्रदर्शन आयोजित किए गए थे। उग्र भीड़ के कुछ छोटे समूहों ने सार्वजनिक संपत्ति पर हमला करते हुए कई जगहों पर अराजकता और हिंसा फैलाई।

साथ ही, अमरीकी साम्राज्यवाद नियंत्रित अंतर्राष्ट्रीय मीडिया ने क्यूबा की सरकार के ख़िलाफ़ उन्हें बदनाम करने का अभियान शुरू कर दिया। बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार का इस्तेमाल किया गया। यह दिखाने के लिए कि क्यूबा के लोग अपनी सरकार के ख़िलाफ़ विद्रोह कर रहे हैं। उसी दिन क्यूबा में सरकार के समर्थन में हुई रैलियों की तस्वीरों और दस साल पहले मिस्र में हुये सरकार विरोधी प्रदर्शनों की तस्वीरों को दिखाकर यह बताया गया कि क्यूबा के लोग अपनी सरकार के ख़िलाफ़ विद्रोह कर रहे हैं। क्यूबा की सरकार पर यह झूठा आरोप लगाया जा रहा है कि वह अपने लोगों को भोजन, दवाइयों, बिजली और अन्य आवश्यक चीजों से वंचित कर रही है। क्यूबा को एक तानाशाही राज्य और मानवाधिकारों के उल्लंघनकर्ता के रूप में दिखाया जा रहा है और उसकी निंदा की जा रही है। अमरीकी राष्ट्रपति बाइडन ने प्रदर्शनकारियों को अपने देश का समर्थन देते हुए दावा किया है कि वे लोकतंत्र और मानवाधिकारों के लिए लड़नेवाले योद्धा हैं। मियामी, फ्लोरिडा के मेयर ने क्यूबा पर बमबारी सहित प्रदर्शनकारियों के समर्थन में अमरीकी सैन्य हस्तक्षेप का आह्वान किया है।

यह पूरी तरह से स्पष्ट हो गया है कि अमरीकी साम्राज्यवादियों ने क्यूबा के अंदर अपने एजेंटों के नेटवर्क को सक्रिय कर दिया है। उनका उद्देश्य क्यूबा की सरकार के ख़िलाफ़ असंतोष फैलाना है। वे हिंसा और अराजकता फैलाकर, अमरीकी सैन्य हस्तक्षेप के लिए परिस्थितियां बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वे मानवीय सहायता प्रदान करने और मानवाधिकारों की रक्षा के नाम पर अपनी आपराधिक गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी क्यूबा के आंतरिक मामलों में अमरीकी सरकार के क्रूर हस्तक्षेप और क्यूबा की सरकार का तख़्ता पलट करने के अमरीका के घृणित प्रयासों की निंदा करती है।

पिछले डेढ़ साल से अधिक समय से क्यूबा अभूतपूर्व आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहा है। अमरीका द्वारा लगाई गई आर्थिक नाकेबंदी को और कड़ा किये जाने की वजह से क्यूबा को इन मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। ट्रम्प शासन ने क्यूबा को आवश्यक विदेशी मुद्रा से वंचित करने के लिए कई क़दम उठाए थे। इसमें अमरीका में रह रहे क्यूबा के लोग जो अपने घर पैसे भेजते थे उनपर पैसे भेजने पर रोक लगाना भी शामिल था। इसमें क्यूबा जाने वाले अमरीकी और अन्य पर्यटकों पर गंभीर प्रतिबंध भी शामिल थे। क्यूबा को अपनी अर्थव्यवस्था चलाने के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा से वंचित रखा गया है। क्यूबा पर अपने लोगों के लिए आवश्यक दवाओं या अन्य आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल के आयात पर भी रोक लगाई गई है। वे लोगों की ज़रूरतों की आवश्यक वस्तुओं और खाने के उत्पादन, बिजली के उत्पादन, वस्तुओं के उत्पादन तथा निर्यात के लिए आवश्यक मशीनरी का आयात नहीं कर पा रहे हैं। बाइडन सरकार ने इन क़दमों को जारी रखा है।

क्यूबा की अर्थव्यवस्था पर कोविड महामारी का विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। उनके ख़िलाफ़ अमरीकी प्रतिबंधों के डर से किसी भी देश ने क्यूबा को टीके उपलब्ध नहीं कराए हैं। इन स्थितियों में, क्यूबा ने अपने स्वयं के टीके विकसित किए हैं और अपनी आबादी को टीका लगाना शुरू कर दिया है।

11 जुलाई को क्यूबा के राष्ट्रपति ने अपने देश के लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि, "हम अपने लोगों की संप्रभुता, स्वतंत्रता और देश की स्वतंत्रता को ख़त्म नहीं होने देंगे। इस शहर में हम बहुत से क्रांतिकारी हैं जो अपनी जान देने को तैयार हैं और यह कोई नारा नहीं है, यह एक दृढ़ संकल्प है। अगर वे क्रांति से मुकाबला करना चाहते हैं तो उन्हें हमारी लाशों पर से गुजरना होगा, हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं और हम सड़कों पर लड़ेंगे।" क्यूबा की स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा के लिए 17 जुलाई को क्यूबा की राजधानी हवाना में एक विशाल रैली आयोजित की गई थी।

क्यूबा सरकार ने बताया कि कैसे अमरीकी राज्य ने "मानवीय सहायता" के नाम पर तथाकथित स्वतः स्फूर्त विरोध का आयोजन किया। अमरीकी सरकार द्वारा प्रायोजित संगठनों ने जनसंचार के आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके क्यूबा में लाखों लोगों को एक साथ स्वचालित संदेश भेजे।

क्यूबा के लोगों द्वारा अपनी सरकार की रक्षा में प्रदर्शन

क्यूबा के लोगों के सामने आ रहे मानवीय संकट के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद ज़िम्मेदार है। वह क्यूबा के लोगों के सामने आने वाली गंभीर कठिनाइयों के लिए ज़िम्मेदार है। अमरीकी साम्राज्यवाद इन कठिनाइयों का फ़ायदा उठाने की कोशिश कर रहा है ताकि वह क्यूबा को झुकाकर अपने अधीन कर सके।

क्यूबा के लोगों और सरकार ने सुनिश्चित किया है कि अमरीका अपने लक्ष्य में सफल न होने पाये। उन्होंने अमरीका और उसके एजेंटों को मुंहतोड़ जवाब दिया है। जब प्रतिक्रांतिकारियों ने अमरीका के आह्वान पर विरोध प्रदर्शन आयोजित किए, तभी क्यूबा के लोग अपनी सरकार की रक्षा के लिए, अपने राष्ट्रपति मिगुएल डियाज–कैनेल बरमूडेज के आह्वान पर सड़कों पर आ गए। उन्होंने अमरीका की नाकेबंदी की निंदा की और अपने देश और व्यवस्था की रक्षा करने का संकल्प लिया। उन्होंने विरोध करने वालों का सामना किया और अमरीकी एजेंटों द्वारा गुमराह किए गए लोगों को समझाया कि वे गलत क्यों थे।

इन संदेशों में लोगों की स्थितियों के प्रति क्यूबा सरकार के लापरवाह रवैये की निंदा की गई और एक विशेष समय और तारीख पर विरोध प्रदर्शन करने का आह्वान किया गया। लोगों से इस बात को छुपाया गया कि ये संदेश अमरीकी खुफिया एजेंसियों द्वारा भेजे गये हैं। इसके बजाय ऐसा दिखाया गया कि ये संदेश क्यूबा के सामान्य नागरिकों से आए हैं। ट्विटर और अन्य सोशल मीडिया ने जानबूझकर अपने नियमों का उल्लंघन करते हुए ऐसा होने दिया।

अमरीकी साम्राज्यवाद अपने पूर्व के स्वर्ग, क्यूबा में अपनी हार को कभी स्वीकार नहीं कर पाया है। 1959 तक क्यूबा अमरीका की एक नव–उपनिवेशित बस्ती थी, जब क्यूबा के लोग क्रांति के लिये उठे और अमरीकी साम्राज्यवादियों को क्यूबा से बाहर निकाल फेंका। तब से पिछले 62 वर्षों से अमरीकी साम्राज्यवाद क्यूबा पर अपने शासन को फिर से स्थापित करने की हर संभव कोशिश करता आ रहा है। इन कोशिशों में सैन्य आक्रमणों का आयोजन, लोगों के बीच अशांति को भड़काना और साथ–साथ फिदेल कास्त्रो और क्यूबा के अन्य नेताओं की हत्या के सी.आई.ए. द्वारा किये गये सैकड़ों प्रयास शामिल हैं। क्यूबा और उसके लोगों को अपने घुटनों पर लाने के प्रयास में, 60 से अधिक वर्षों से अमरीका ने क्यूबा पर बर्बर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए हैं। अमरीकी सरकार के एक उच्च अधिकारी लेस्टर डीण मैलोरी ने 6 अप्रैल, 1960 को लिखा था कि, "क्यूबा के आर्थिक जीवन को कमजोर करने के लिए हर संभव उपाय तुरंत किए जाने चाहिए। क्यूबा को धन और आपूर्ति से वंचित करना, मौद्रिक और वास्तविक मज़दूरी का स्तर गिराना, भूख और हताशा फैलाना और सरकार को उखाड़ फेंकना।" अमरीका ने हाल के वर्षों में क्यूबा पर प्रतिबंध तेज़ कर दिए हैं। लेकिन इन सबके बावजूद वे अपने मक़सद में सफल नहीं हो पाए हैं। इसके विपरीत, अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लोगों की स्वतंत्रता और संप्रभुता का बेशर्मी से हनन करने वाले राज्य बतौर अमरीका का पर्दाफ़ाश हुआ है।

क्यूबा पर लगाए अन्यायपूर्ण नाकेबंदी की दुनिया के अधिकांश देशों ने निंदा की है। अभी हाल ही में, 23 जून को संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने भारी बहुमत से अमरीका को क्यूबा से नाकेबंदी को समाप्त करने का आह्वान किया। 184 देशों ने प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया। केवल दो देशों, अमरीका और इस्राइल ने इसके ख़िलाफ़ मतदान किया। यह लगातार 29वां वर्ष है जब संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने क्यूबा में नाकेबंदी को समाप्त करने का आह्वान किया है। लेकिन फिर भी अंतर्राष्ट्रीय राय की अवहेलना करते हुए, अमरीका ने नाकेबंदी को जारी रखा है तथा उसे और कड़ा कर दिया है।

क्यूबा के लोगों के साम्राज्यवाद–विरोधी साहसी रुख़ को दुनिया की सभी साम्राज्यवाद–विरोधी ताक़तों का समर्थन प्राप्त है। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों और देशों के बीच संबंधों को नियंत्रित करने वाले सभी अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के खुले उल्लंघन में क्यूबा की अमानवीय नाकेबंदी को तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए। अमरीकी साम्राज्यवाद को यह तय करने का कोई अधिकार नहीं है कि क्यूबा के लोगों के पास किस तरह की आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था होनी चाहिए। क्यूबा के लोगों को साम्राज्यवादी हुकूमत से मुक्त अपनी पसंद की आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था चुनने का पूरा अधिकार है।

http://hindi.cgpi.org/21136

Internet Editions

Mazdoor Ekta Lehar (Hindi Fortnightly) http://www.hindi.cgpi.org
Mazdoor Ekta Lehar (Punjabi) http://www.punjabi.cgpi.org
Thozhilalar Ottrumai Kural (Tamil) http://www.tamil.cgpi.org
Mazdoor Ekta Lehar (English) http://www.cgpi.org
email : melpaper@yahoo.com, mazdoorektalehar@gmail.com
Ph.09868811998, 09810167911

बिजली क्षेत्र के मज़दूरों का देशव्यापी प्रदर्शन

19 जुलाई, 2021 को संसद के मानसून सत्र के पहले दिन, बिजली क्षेत्र के मज़दूरों ने देशव्यापी प्रदर्शन किया। इसमें 20 लाख से अधिक बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों में से 60 प्रतिशत से अधिक ने हिस्सा लिया। यह प्रदर्शन दो घंटे चला।

प्रदर्शन की अगुवाई नेशनल कोर्डिनेशन कमेटी ऑफ इलेक्ट्रीसिटी इम्प्लाईज़ एंड इंजीनियर्स (एन.सी.सी.ओ.ई.ई.ई.) ने की।

प्रदर्शन के बाद हड़ताल के नोटिस की घोषणा की गई। घोषित नोटिस में कहा गया है कि अगर उनकी मांगें पूरी नहीं की जाती हैं तो बिजली क्षेत्र के मज़दूर 10 अगस्त को देशभर में एक दिन के लिए काम का बहिष्कार करेंगे। मांगों में बिजली (संशोधन) विधेयक–2021 को रद्द करना शामिल है, जिसे चालू मानसून सत्र के दौरान संसद में पेश किया जाएगा। संशोधन विधेयक को रद्द करने के साथ–साथ, मज़दूरों की मांग है कि बिजली क्षेत्र में मौजूद सभी निजी लाइसेंसों और फ्रेंचाइजियों को रद्द किया जाये और राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में बिजली के निजीकरण की प्रक्रिया को तुरंत रोका जाये।

विद्युत अधिनियम में किए जाने वाले संशोधन से बिजली वितरण व्यवसाय को लाइसेंस मुक्त करने का प्रयास है। इसका परिणाम होगा कि देशभर में बिजली वितरण के निजीकरण को बढ़ावा मिलेगा। यह प्रक्रिया पहले से ही कुछ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में चालू हो चुकी है। एन.सी.सी.ओ.ई.ई.ई. ने इस बात को सामने रखा कि विद्युत (संशोधन) विधेयक का उद्देश्य इजारेदार पूंजीपतियों के लिए अधिकतम मुनाफ़े सुनिश्चित करना है। बिजली वितरण व्यवसाय को निजी कंपनियों के लिए खोलने से आम उपभोक्ता के लिए बिजली के दाम बढ़ जाएंगे।

समन्वय समिति 10 अगस्त की हड़ताल के लिए बिजली क्षेत्र के मज़दूरों को तैयार करने के लिए योजना बना रही है। इस बीच, उन्होंने 25 जुलाई से 9 अगस्त तक एक देशव्यापी अभियान शुरू करने की योजना बनाई है। 27 जुलाई को बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों का एक प्रतिनिधिमंडल केंद्रीय बिजली, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आर.के. सिंह से मिलने और अपनी मांगों को उनके समक्ष रखने के लिए दिल्ली आयेगा।

http://hindi.cgpi.org/21149

उत्तराखंड के ऊर्जा कर्मचारियों की हड़ताल सफल

उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड (यू.जे.वी.एन.एल.) के तहत तीनों निगमों के लगभग 3500 कर्मचारियों ने 26 जुलाई की आधी रात से अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू कर दी। यह हड़ताल विद्युत अधिकारी–कर्मचारी संयुक्त मोर्चा के आह्वान पर आयोजित की गयी थी। हड़ताल की वजह से सम्पूर्ण उत्तराखंड राज्य में बिजली का उत्पादन, प्रसारण और वितरण 27 जुलाई को पूरी तरह ठप्प रहा।

बिजली कर्मचारी इसलिए हड़ताल करने को मजबूर हुए क्योंकि राज्य सरकार उनकी 14 सूत्रीय मांगों को मानने से बार–बार इंकार करती रही है। राज्य के ऊर्जा सचिव से जब 26 जुलाई के दिन भी बातचीत विफल हो गई तब कर्मचारियों ने हड़ताल पर जाने का यह क़दम उठाया। कर्मचारी मांग कर रहे हैं कि सुनिश्चित पदोन्नति (ए.सी.पी.) की पुरानी व्यवस्था को बहाल किया जाये, जिसके अनुसार 9, 5 और फिर 5 साल की सेवा के बाद पदोन्नति की जाती थी। बिजली निगमों में सातवें वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने के समय इस व्यवस्था को वापस ले लिया गया था। हड़ताली कर्मचारी यह भी मांग कर रहे हैं कि उत्तराखंड पूर्व सैनिक कल्याण निगम लिमिटेड (उपनल) के सभी संविदा कर्मचारियों को नियमित किया जाये। समान कार्य के लिए समान वेतन तथा बिजली क्षेत्र में निजीकरण का विरोध आदि, और भी कई महत्वपूर्ण मांगें इनमें शामिल हैं।

बिजली मुख्यालयों पर बिजली कर्मचारियों का जोशीला प्रदर्शन

हड़ताली कर्मचारियों को डराने–धमकाने के लिए, उत्तराखंड प्रशासन ने 26 जुलाई को ऊर्जा विभाग में हड़ताल पर रोक के आदेश जारी कर दिए। 6 महीने के लिए यू.पी.सी.एल. और यू.जे.वी.एन.एल., पिटकुल में हड़ताल पर रोक के आदेश दिए गए। साथ ही प्रशासन ने यह भी घोषित किया है कि सरकार ने 'बैक अप प्लान' बना लिया है जिससे बिजली सप्लाई सुचारू रूप से सुनिश्चित की जाएगी। परन्तु जुझारू कर्मचारियों ने ऐलान कर दिया कि जब तक सारी मांगें पूरी नहीं होंगी, तब तक हड़ताल जारी रहेगी। सरकार की धमकियों से न तो कर्मचारियों का हौसला टूटा और न ही बिजली सप्लाई जारी रही।

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून की सड़कों पर बिजली कर्मचारियों का जुलूस

पूरे राज्य में सभी बिजली कर्मचारियों ने काम रोककर मुख्यालयों पर दिन–भर जोशीला प्रदर्शन जारी रखा। उनकी इस दृढ़ एकता की वजह से ठेकेदार के भरोसे छोड़ा गया बिजली सिस्टम पूरी तरह चौपट हो गया। बैकअप प्लान के नाम पर की गई व्यवस्थाएं औंधे मुंह गिरी नज़र आईं। पूरे राज्यभर में पावर सप्लाई सिस्टम बुरी तरह बाधित हुआ, जिसका बुरा असर उद्योगों पर भी पड़ा।

कई वर्षों से कर्मचारी अपनी मांगों को उठाते आ रहे हैं, मगर सरकार ने उन्हें अनसुना कर दिया है। मगर अब की बार कर्मचारियों की इस एकता को देखकर केवल एक दिन में ही सरकार को झुकना पड़ा। 27 जुलाई की शाम को राज्य के ऊर्जा मंत्री ने खुद संयुक्त मोर्चा के प्रतिनिधियों से बातचीत की। सबसे पहले उन्होंने आश्वासन दिया कि हड़ताल के दौरान न तो किसी कर्मचारी का वेतन काटा जाएगा और न ही किसी हड़ताली कर्मचारी पर कोई कार्रवाई की जाएगी। सभी मांगों के जल्द समाधान का आश्वासन मंत्री की ओर से दिया गया। तीनों निगमों के निजीकरण पर रोक लगाने की कर्मचारियों की मांग के सिलसिले में ऊर्जा मंत्री को कर्मचारियों के गुस्से से खुद को बचाने के लिए यह कहना पड़ा कि "प्रशासन स्तर पर ऐसा कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है"।

वार्ताओं के दौरान, वार्ताकक्ष के बाहर प्रदेशभर से आये कर्मचारी अपनी मांगों के नारे लगाते रहे और आंदोलन में जोश भरते रहे। देर रात तक कर्मचारी धरने पर बैठे रहे।

देशभर में बिजली कर्मचारी और किसान बिजली कानून सुधार विधेयक–2021 के ज़रिये बिजली क्षेत्र के तेज़ गति से किये जा रहे निजीकरण का विरोध कर रहे हैं। इस संघर्ष के चलते, उत्तराखंड के सभी बिजली कर्मचारियों का यह एकजुट संघर्ष निश्चित ही बहुत स्फूर्तिदायी है। हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी इस संघर्ष का पूरा समर्थन करती है और देशभर के लोगों से आह्वान करती है कि सभी लोग इसे अपना पुरजोर समर्थन दें।

http://hindi.cgpi.org/21157

बिजली कर्मचारियों को महिलाओं का समर्थन

हरियाणा में किसान–विरोधी कानूनों के ख़िलाफ़ प्रदर्शन

किसान–विरोधी कानूनों के ख़िलाफ़ आन्दोलन के चलते, 11 जुलाई को हरियाणा में किसानों ने कई विरोध प्रदर्शन किये। किसानों ने इससे पहले ही अपना फ़ैसला घोषित कर दिया था कि वे अपनी मांगों को उठाने के लिए राज्य सरकार द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों पर धरना–प्रदर्शन करेंगे।

रिपोर्टों के अनुसार, सिरसा में प्रदर्शनकारी किसानों ने हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा का घेराव किया था।

हरियाणा सरकार ने पांच किसानों को गिरफ़्तार कर लिया और उन पर राज्द्रोह का आरोप लगा दिया। इसके जवाब में हजारों–हजारों किसानों ने सचिवालय, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय और भगत सिंह स्टेडियम को जाने वाली सभी सड़कों को रोक दिया। संयुक्त किसान मोर्चा के कई नेता किसानों को संबोधित करने के लिए आये और उन सभी ने पांचों किसानों की रिहाई के लिए संघर्ष को तेज़ करने का वादा किया। संयुक्त किसान मोर्चा के नेता बलदेव सिंह सिरसा उनकी रिहाई की मांग को लेकर आमरण अनशन पर बैठ गए। अंत में, 21 जुलाई को सरकार ने गिरफ़्तार किये गए पांचों किसानों को रिहा कर दिया।

फतेहाबाद में आन्दोलनकारी किसानों ने एक सरकारी कार्यक्रम पर प्रदर्शन किया,

राजद्रोह कानून के तहत पांच किसानों की गिरफ़्तारी के विरोध में सिरसा में काला झंडा प्रदर्शन और चक्काजाम

जिसमें हरियाणा सहकार्य मंत्री बनवारी लाल और सिरसा की सांसद सुनीता दुग्गल सभा को संबोधित करने वाले थे। भारी पुलिस बैरिकेड का मुक़ाबला करते हुए, किसानों ने अपनी मांगों के लिए नारे लगाये।

झज्झर जिले में, आंदोलित किसानों ने काले झंडों के साथ एक सरकारी कार्यक्रम पर प्रदर्शन किया, जिसे राज्य के भाजपा नेता ओ.पी. धनकर संबोधित करने वाले थे। किसानों ने कार्यक्रम को रोक दिया और अपने नारों से यह साफ कर दिया कि जब तक किसानों की मांगें पूरी नहीं की जाएंगी, तब तक वे किसी भी सरकारी प्रोग्राम को क़ामयाब नहीं होने देंगे।

अम्बाला जिले में किसानों ने अम्बाला–साहा रोड पर एक सरकारी कार्यक्रम में विरोध प्रदर्शन किया। पानीपत में पुलिस ने प्रदर्शनकारी किसानों को गिरफ़्तार कर लिया परन्तु किसानों के विरोध के चलते, उन्हें जल्दी ही रिहा करना पड़ा। सरकार के प्रति अपना गुस्सा दर्शाने के लिए किसानों ने पंजाब के गुरदासपुर जिले के डेरा बाबा नानक से दिल्ली के सिंघु बॉर्डर तक ट्रेक्टर और अन्य वाहनों के साथ मार्च किया।

किसान तीनों कानूनों को रद्द करवाने के लिए और सभी कृषि उत्पादों के लाभकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी देने वाले कानून के लिए अपने संघर्ष पर टिके हैं।

http://hindi.cgpi.org/21140

उदारीकरण और निजीकरण के 30 साल बाद

पृष्ठ 1 का शेष

वैश्विक और हिन्दोस्तानी पूंजीवादी निगमों के प्रभुत्व और लूट के लिए और अधिक खोल दिया गया है। इन क़दमों ने कृषि आय की असुरक्षा को अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ा दिया है, जिससे किसान गहरे क़र्ज़ में डूब गए हैं। इन तीन दशकों में लाखों किसानों को आत्महत्या तक करने के लिए मजबूर किया गया है।

हिन्दोस्तान के अमीर पूंजीपति पहले से कहीं ज्यादा तेज़ी से अमीर हो रहे हैं। डॉलर अरबपतियों की संख्या वर्ष 1990 के शून्य से बढ़कर वर्ष 2020 में 140 हो गई है। एक डॉलर अरबपति वह है जिसके पास आज की विनिमय दर पर 7,500 करोड़ रुपये या उससे अधिक की निजी संपत्ति है।

टाटा, अंबानी, बिरला, अदानी और अन्य इजारेदार पूंजीवादी घरानों ने वैश्विक बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी का विस्तार किया है और बड़े पैमाने पर विदेशों में निवेश किया है। उनमें से कुछ हमारे अपने देश की तुलना में विदेशों से अधिक मुनाफ़ा कमाते हैं। वैश्वीकरण का वास्तविक अर्थ और उद्देश्य अब सबको प्रत्यक्ष रूप से दिख रहा है। यह एक तरफ, हिन्दोस्तानी इजारेदार घरानों की दुनिया के सबसे अमीर पूंजीपतियों की कतार में शामिल होने की मुहिम है, जबकि दूसरी तरफ हमारे देश के मज़दूर और किसान दुनिया के सबसे ग़रीब लोगों में गिने जाते हैं। यह इजारेदार पूंजीपतियों की लालच और उनके साम्राज्यवादी मंसूबों को पूरा करने के लिए देश और उसकी अर्थव्यवस्था को संकटग्रस्त विश्व साम्राज्यवादी व्यवस्था से और अधिक उलझाने का कार्यक्रम है। इस सच्चाई को छिपाने के लिए कि 30 साल पहले शुरू किए गए कार्यक्रम का उद्देश्य था, इजारेदार पूंजीवादी लालच को पूरा करना, मनमोहन सिंह के बजट भाषण में ट्रस्टीशिप के गांधीवादी सिद्धांत का उल्लेख किया गया था। उन्होंने कहा (मनमोहन सिंह के शब्दों में) कि, – "धन–सम्पत्ति के निर्माण के लिए, हमें पूंजी के संचय को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसका मतलब अनिवार्य रूप से होगा – आत्मसंयम का शासन। हमें धन पैदा करने वालों (अर्थात पूंजीपतियों) के रास्ते की रुकावटों को भी दूर करना है। ... जो लोग इसे (पूंजी को) बनाते हैं और उसके मालिक हैं, उन्हें (इस पूंजी को) एक ट्रस्ट के रूप में रखना होगा और इसका उपयोग समाज के हित में करना होगा, खासकर उन लोगों के लिए जिन्हें कम–विशेषाधिकार प्राप्त हैं और जिनके पास (जीने के) पर्याप्त साधन नहीं हैं। वर्षों पहले, गांधी जी ने ट्रस्टीशिप के दर्शन की व्याख्या की थी। यह दर्शन हमारा मार्गदर्शक सितारा होना चाहिए।"

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, इजारेदार पूंजीपतियों ने इन तीन दशकों में भारी मात्रा में बेशुमार धन–सम्पत्ति जमा की है। उन्होंने अपने धन को समाज के हित में लगाने की बात तो दूर, अपनी सम्पत्ति को केवल अपने लिए और अधिक धन संचय करने के हित में ही लगाया है।

मनमोहन सिंह पूंजीपतियों को दौलत पैदा करने वाले बताकर, एक सफेद झूठ को सच करने की कोशिश कर रहे थे। यह मानव श्रम ही है जो धन–सम्पत्ति बनाता है। मज़दूर, किसान और अन्य मेहनतकश लोग ही धन–सम्पत्ति के असली निर्माता हैं। पूंजीपति बड़े पैमाने के उत्पादन के साधनों के मालिक हैं। वे मज़दूरों और किसानों का शोषण और लूट करके ही अपनी संपत्ति का विस्तार करते हैं।

आज़ादी के बाद के शुरुआती दशकों में कई आवश्यक वस्तुओं में भारी कमी देखी गयी, आम लोगों को कई अकालों और खाद्य–पदार्थों के लिए दंगों का सामना करना पड़ा। आज बाज़ार में बहुत सारी वस्तुएं उपलब्ध हैं। हालांकि, अधिकांश लोगों के पास उन्हें खरीदने के लिए पर्याप्त क्रय–शक्ति नहीं है। नतीजतन, अर्थव्यवस्था संकट में है। पूरे देश में मज़दूरों और किसानों के विरोध प्रदर्शन बड़े पैमाने पर हो रहे हैं।

निष्कर्ष

सोवियत संघ के पतन बाद की अवधि की परिस्थितियों में अपने खुदगर्ज मंसूबों को हासिल करने के लिए इजारेदार पूंजीपतियों के अपने पुराने नीतिगत ढांचे को तोड़ने का फ़ैसला, 1991 में प्रमुख सुधारों की शुरुआत का आधार है। विश्व बैंक और आई.एम.एफ. द्वारा निर्धारित वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के नुस्खे को अपनाने के लिए टाटा, अंबानी, बिरला और अन्य लोगों के फ़ैसले में निहित है। मनमोहन सिंह को 30 साल पहले अपने बजट भाषण में इस कार्यक्रम के अनावरण का ज़िम्मा सौंपा गया था।

नतीजे इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह पूंजीवादी शोषण और साम्राज्यवादी लूट की गति को और भी तीव्र करके, हिन्दोस्तानी और विदेशी इजारेदार पूंजीपतियों की लालच को पूरा करने का कार्यक्रम है।

इजारेदार पूंजीपतियों के प्रवक्ता, मनमोहन सिंह के 1991 के बजट भाषण की स्वाभाविक रूप से प्रशंसा करते हैं। मज़दूरों, किसानों और मेहनतकश बहुसंख्यक लोगों के लिए यह इजारेदार पूंजीवादी विकास के सबसे विनाशकारी चरण की शुरुआत का प्रतीक है। आम मेहनतकश लोगों की आजीविका और ज़िंदगी एवं प्राकृतिक पर्यावरण के लिए इसके विनाशकारी परिणाम हमारे सामने हैं।

आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता, इस समाज–विरोधी कार्यक्रम को तत्काल समाप्त करने के लिए एकजुट होकर लड़ना है, जिससे लोगों को अर्थव्यवस्था की दिशा को बदलने का हक़ हासिल हो सके। नयी आर्थिक व्यवस्था में इजारेदार पूंजीवादी लालच को पूरा करने की बजाय, वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन को लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किया जाएगा।

http://hindi.cgpi.org/21140

मज़दूर एकता लहर के पाठकों से अनुरोध

अनेक साथी मज़दूर एकता लहर के बैंक खाते में आनलाईन ट्रांस्फर से पैसे भेज रहे हैं। हमारा अनुरोध है कि जो साथी पैसे भेजें, वे इसकी पूरी सूचना हमें दें। पैसे भेजने वाले के नाम या फोन नंबर की पूरी जानकारी, बैंक से नहीं मिल पाती। इसलिये आप सभी साथियों से अनुरोध है कि पैसा ट्रांस्फर करके **मज़दूर एकता लहर** के वाट्सएप्प नंबर-9868811998 पर सूचना अवश्यक दें या 9810167911 पर फोन से सूचित करें।

जबरन वी.आर.एस. दिये जाने के विरोध में प्रदर्शन

मध्य प्रदेश के खारगौन जिले में स्थित, सेंचुरी यार्न और सेंचुरी डेनिम मिल्स के मज़दूर 12 जुलाई से मिल में ही भूख हड़ताल पर हैं। आदित्य बिरला समूह की सेंचुरी टेक्सटाइल्स एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड की मालिकी और प्रबंधन वाली, यह मिल मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 290 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

आदित्य बिरला समूह ने, 84 एकड़ में फैली इस फैक्ट्री को पहली बार 2017 में कोलकाता स्थित कंपनी वेयरिट ग्लोबल लिमिटेड को कौड़ियों के दाम पर बेच दिया था। (बॉक्स देखें : विरोध की पृष्ठभूमि) नई कंपनी ने बाद में इस मिल को बंद कर दिया, जिससे कारखाने के 900 से अधिक मज़दूर रातों–रात बेरोज़गार हो गए।

पिछले लगभग 4 वर्षों से लेकर आज तक, कोविड–19 महामारी से पहले और उसके दौरान भी, सेंचुरी मिल के मज़दूर इसको बंद किये जाने से अपनी आजीविका पर आये ख़तरे का विरोध कर रहे हैं।

अदालती लड़ाई के कारण मिल बंद होने के बाद भी मज़दूरों को वेतन मिल रहा था। लेकिन 29 जून को कंपनी ने एक आदेश जारी कर दिया। इस आदेश में कहा गया है कि सभी मज़दूरों को वी.आर.एस. (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना) लेना होगा और जिसके लिए 13 जुलाई अंतिम तिथि रखी गई है।

मज़दूर कंपनी द्वारा जबरन वी.आर.एस. देने के फ़ैसले का विरोध कर रहे हैं। कंपनी प्रबंधन ने मनमाने ढंग से मज़दूरों के बैंक खातों में वी.आर.एस. की एक छोटी राशि भेज दी है और मज़दूरों को आदेश दिया है कि वे मिल परिसर में स्थित अपने घरों को खाली कर दें। अपने वेतन के अचानक बंद हो जाने से सभी मज़दूर हताश हैं और एक अत्यंत अनिश्चित भविष्य का सामना कर रहे हैं। श्रमिक जनता संघ (एस.जे.एस.) के बैनर तले संगठित मज़दूरों ने कंपनी के फ़ैसले को मध्य प्रदेश की उच्च अदालत में चुनौती देते हुए इसे "औद्योगिक नियमों का घोर उल्लंघन" बताया है।

विरोध करने वाले मज़दूरों को जिला प्रशासन की ओर से लगातार धमकियों का सामना करना पड़ रहा है। मज़दूरों को अपने विरोध प्रदर्शन को वापस लेने का आदेश दिया गया है। उनके विरोध प्रदर्शन को निषेधात्मक आदेशों – महामारी की स्थिति में लागू धारा 144 – के तहत "अवैध" घोषित कर दिया गया है। पुलिस बार–बार हड़ताल ख़त्म करने के लिए मज़दूरों को डराने–धमकाने की कोशिश कर रही है। 17 जुलाई को पुलिस ने भूख हड़ताल पर बैठे कई प्रदर्शनकारी मज़दूरों को गिरफ़्तार कर लिया था।

सेंचुरी मिल के मज़दूरों पर जबरन वी.आर.एस. थोपने और उनकी नौकरी को ख़त्म किए जाने के ख़िलाफ़ संघर्ष, आजीविका के अधिकार के लिए संघर्ष है। उनका यह संघर्ष पूरी तरह से जायज़ है।

http://hindi.cgpi.org/21154

सेंचुरी यार्न और सेंचुरी डेनिम मिल्स के मज़दूर 12 जुलाई से मध्य प्रदेश के खारगौन जिले में स्थित कारख़ाने में भूख हड़ताल पर

विरोध की पृष्ठभूमि

2017 में आदित्य बिरला समूह ने लगभग 100 करोड़ रुपये का नुकसान दिखाते हुए मिल, भवन, मशीनरी आदि को वेयरिट ग्लोबल लिमिटेड को 2.5 करोड़ रुपये में बेच दिया था। इसके ठीक एक हफ्ते पहले कंपनी ने प्रस्तावित बिक्री का विरोध कर रहे मज़दूरों से वादा किया था कि वह कंपनी को नहीं बेचेगी।

17 मई, 2018 को औद्योगिक न्यायाधिकरण अदालत ने मज़दूरों के पक्ष में आदेश पारित किया था और आदित्य बिरला समूह और वेयरिट ग्लोबल लिमिटेड के बीच बिक्री के समझौते को रद्द कर दिया था।

बाद में मध्य प्रदेश की उच्च अदालत ने भी न्यायाधिकरण अदालत के फ़ैसले को बरक़रार रखा और आदेश दिया कि मई 2018 से मज़दूरों के वेतन का भुगतान किया जाए। लेकिन 15 जुलाई, 2021 को आदित्य बिरला समूह ने मज़दूरों को मरने के लिए छोड़ दिया और फैक्ट्री को मंजीत ग्लोबल को बेच दिया।

तमिलनाडु में सफ़ाईकर्मियों का बकाया वेतन के भुगतान के लिए संघर्ष

तमिलनाडु के सेलम शहर में, सफ़ाई कर्मियों (हाथ से मैला ढोने वालों) ने 14 जुलाई को नगर–निगम के कार्यालय पर धरना दिया और मांग की कि निगम द्वारा उनके बकाया वेतन का भुगतान किया जाये।

विरोध प्रदर्शनों में शामिल मज़दूरों ने इस हक़ीक़त को पेश किया कि सफ़ाई–कर्मियों ने कोविड–19 महामारी के दौरान अपनी जान को जोख़िम में डालकर लगातार काम किया, इसके बावजूद नगरपालिका के अधिकारियों ने मज़दूरों को उनके वेतन का भुगतान नहीं किया है। उन्होंने बताया कि सभी 60 वार्डों में, स्थायी और अस्थायी दोनों तरह के मज़दूरों को मिलाकर 5,000 से अधिक सफ़ाई कर्मचारी कार्यरत हैं। उन्हें मासिक वेतन दिया जाना चाहिए। लेकिन पिछले तीन महीने से, 2,500 से अधिक स्थायी कर्मचारियों को उनके वेतन का भुगतान नहीं किया गया है। उनकी मांग है कि नगर–निगम जल्द से जल्द उनके बकाया वेतन का भुगतान करे। उन्होंने अधिकारियों से शिकायत की है कि वेतन नहीं मिलने के कारण वे न तो अपने मकान का किराया दे पा रहे हैं और न ही उनके पास अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरी करने के लिए पर्याप्त साधन हैं। प्रदर्शन कर रहे मज़दूरों ने यह भी शिकायत की है कि भविष्य निधि के खाते में जमा करने के लिए उनके वेतन से नियमित रूप से की गई कटौती के बावजूद, उनके पी.एफ. खातों में यह राशि जमा नहीं की गई। उन्होंने अधिकारियों पर मज़दूरों की कड़ी मेहनत की कमाई के साथ धोखाधड़ी करने का आरोप भी लगाया है।

http://hindi.cgpi.org/21145

मणिपुर की नर्सों ने चेतावनी दी

प्रशिक्षित नर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (टी.एन.ए.आई.) की मणिपुर शाखा ने चेतावनी दी है कि अगर सरकार ने नर्सों के ग्रेड वेतन और भत्ते को बढ़ाने की मांग को 20 जुलाई तक पूरा नहीं किया तो वे 29 जुलाई से हड़ताल पर जायेंगी।

14 जुलाई को टी.एन.ए.आई. ने राज्य के मुख्य सचिव को एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया गया है कि राज्य में कोविड–19 के बड़े पैमाने पर फैलने और परिणामस्वरूप दर्दनाक मौतों के बीच, राज्य के सरकारी अस्पतालों की नर्सें खुद के जीवन को जोख़िम में डालकर मरीजों को बचाने के लिए अथक परिश्रम कर रही हैं। हालांकि उनके वेतन और नर्सिंग भत्ते की मांग को सरकार नज़र अंदाज़ करती आ रही है, नर्सों ने मांग की है कि राज्य में सातवें वेतन आयोग के लागू होने के बाद से, उन्हें केंद्र सरकार के अधीन काम कर रही नर्सों के बराबर, समान वेतन और भत्ता दिया जाना चाहिए।

http://hindi.cgpi.org/21152

पाठक वार्षिक ग्राहकी शुल्क सीधे हमारे बैंक खाते में भेजें

पाठक अपना वार्षिक ग्राहकी शुल्क (150 रुपये) सीधे हमारे बैंक खाते में जमा करके हमें इसकी सूचना नीचे दिये फोन, ईमेल या वाट्सएप पर अवश्य दें।

प्रति : लोक आवाज़ पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, नई दिल्ली कालका जी, **खाता संख्या** :– 20066800626

ब्रांच कोड :– 00974 न्यू दिल्ली, कालका जी

आई.एफ.एस. कोड (IFSCode) :– MAHB0000974

फोन : 9810167911, 9868811998 (वाट्सएप)

email : melpaper@yahoo.com, mazdoorektalehar@gmail.com

भारत संचार निगम लिमिटेड के निजीकरण का विरोध करें!

"निजीकरण के ख़िलाफ़ एकजुट हों!" श्रृंखला में कामगार एकता कमेटी द्वारा आयोजित तेरहवीं सभा!

कामगार एकता कमेटी (के.ई.सी.) ने भारत संचार निगम लिमिटेड (बी.एस.एन.एल.) के निजीकरण का विरोध करने के लिए 20 जून, 2021 को एक जनसभा आयोजित की। इसमें स्टील, रेलवे, बंदरगाह और डॉक, बिजली, पेट्रोलियम, बी.एस.एन.एल. और जन संगठनों के कार्यकर्ताओं के 200 से अधिक नेताओं और प्रतिभागियों ने भाग लिया। सितंबर 2020 में शुरू हुई "निजीकरण के ख़िलाफ़ एकजुट हों" श्रृंखला की यह 13वीं बैठक थी। पिछली बैठकें विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों और सरकारी प्रतिष्ठानों के निजीकरण से संबंधित थीं।

के.ई.सी. के सचिव कॉमरेड मैथ्यू ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और बताया कि इन वेबिनार के माध्यम से के.ई.सी. निजीकरण के ख़िलाफ़ आम संघर्ष के इर्द–गिर्द एकता बनाने का प्रयास कर रही है। इसके बाद उन्होंने आमंत्रित वक्ताओं, कॉमरेड चंद्रेश्वर सिंह, महासचिव, नेशनल फेडरेशन ऑफ टेलीकॉम एम्प्लॉईज़ (एन.एफ.टी.ई.)–बी.एस.एन.एल.; श्री सेबास्टिन के. महासचिव, संचार निगम एग्जिक्यूटिव्स (एस.एन.ई.ए.)–बी.एस.एन.एल.; कॉमरेड पी. कामराज, तमिलनाडु सर्कल अध्यक्ष और सचिव, केंद्रीय मुख्यालय, नेशनल फेडरेशन ऑफ टेलीकॉम एम्प्लॉईज (एन.एफ.टी.ई.)–बी.एस.एन.एल. और कॉमरेड रंजन दानी, महाराष्ट्र सर्कल सचिव, नेशनल फेडरेशन ऑफ टेलीकॉम एम्प्लॉईज (एन.एफ.टी.ई.)–बी.एस.एन.एल. का स्वागत किया।

उन्होंने विभिन्न सर्व हिन्द फेडरेशनों और विभिन्न क्षेत्रों की एसोसियेशनों के राष्ट्रीय नेताओं का भी स्वागत किया जो बड़ी संख्या में वेबिनार में उपस्थित थे। उन्होंने कॉमरेड एल.एन. पाठक, जोनल सचिव, उत्तर रेलवे, ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ इंडियन रेलवेमेन (ए.आई.आर.एफ.) और महासचिव, रेल कोच फैक्ट्री मेन्स यूनियन, रायबरेली, उत्तर प्रदेश; कॉमरेड कृष्णा भोयर, संयुक्त सचिव, ऑल इंडिया इलेक्ट्रिसिटी वर्कर्स फेडरेशन और महासचिव, महाराष्ट्र स्टेट इलेक्ट्रिसिटी वर्कर्स फेडरेशन (ए.आई.टी.यू.सी.); कामरेड के.एन. सत्यनारायण, महासचिव, हिंदुस्तान पेट्रोलियम एम्प्लॉईज यूनियन, विशाखापट्टनम रिफाइनरी; कॉमरेड जॉन वर्गीस, सहायक महासचिव, बी.एस.एन.एल. कर्मचारी संघ (बी.एस.एन.एल.ई.यू.); कॉमरेड जी. अनिल कुमार, संगठन सचिव, नेशनल कन्फेडरेशन ऑफ ऑफिसर्स एसोसिएशन; कॉमरेड किशोर नायर, महासचिव, भारत पेट्रोलियम टेक्निकल एंड नॉन टेक्निकल एम्प्लॉइज एसोसिएशन – मुंबई रिफाइनरी; कॉमरेड आर. इलांगोवन, पूर्व महासचिव, दक्षिण रेलवे एम्प्लॉईज यूनियन (डी.आर.ई.यू.); कॉमरेड वी.वी. सत्यनारायण, संयुक्त सचिव, हिंद मजदूर सभा और महासचिव, विशाखापट्टनम पोर्ट एम्प्लॉईज यूनियन (अखिल भारतीय बंदरगाह और डॉक वर्कर्स फेडरेशन); कॉमरेड कांता राजू, महासचिव, ऑल इंडिया रेल ट्रैकमेंटेनर्स यूनियन (ए.आई.आर.टी.यू.); कॉमरेड अमजद बेग, केंद्रीय अध्यक्ष, आल इंडिया पॉइंट्समेन एसोसिएशन (ए.आई.पी.एम.ए.); कॉमरेड श्याम नायर, जोनल सेक्रेटरी, वेस्टर्न रेलवे, ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन (ए.आई.एल.आर.एस.ए.); कॉमरेड डी.के. साहा, सह–संयोजक, नेशनल कोऑर्डिनेशन कमेटी ऑफ इलेक्ट्रिसिटी इंजीनियर्स एंड एम्प्लॉइज, असम; कॉमरेड पी.एस. सिसोदिया, केंद्रीय उपाध्यक्ष और निर्देशक शिक्षा/ट्रेड यूनियन/उत्तरी रेलवे मज़दूर यूनियन/एन.एफ.आई.आर.; कॉमरेड अजीत प्रधान, नीलांचल इस्पात निगम लिमिटेड (एन.आई.एन.एल.), ओडिशा; कॉमरेड कस्टोडियो मेंडोंसा, महासचिव, ऑल इंडिया पोर्ट एंड डॉक वर्कर्स पेंशनर्स एसोसिएशन; कॉमरेड चेतन पार्वतिया, आयोजन सचिव एवं कॉमरेड प्रणव कुमार, कार्यकारी अध्यक्ष, मुंबई मंडल, ऑल इंडिया रेल ट्रैकमेंटेनर्स यूनियन (ए.आई.आर.टी.यू.); कॉमरेड एंटनी स्वामी–अमची बेस्ट अमची मुंबई; कॉमरेड गीता महाजन – भारतीय महिला फेडरेशन; कॉमरेड जे. विश्वकर्मा–सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) और कॉमरेड स्नेहल कांबले, फोरम अगेंस्ट प्राइवेटाइजेशन का स्वागत किया।

पहली प्रस्तुति के.ई.सी. के कॉमरेड गिरीश ने की जिसमें उन्होंने दूरसंचार क्षेत्र का एक संक्षिप्त विवरण दिया और बताया कि कैसे 1991 से सरकार का नेतृत्व करने वाले सभी दलों ने यह सुनिश्चित किया है कि निजीकरण और उदारीकरण के माध्यम से वैश्वीकरण की नीति को लागू किया जाये। (बॉक्स देखें)

सभी आमंत्रित वक्ताओं के साथ–साथ अन्य प्रतिभागियों ने इस प्रस्तुति और उनके व्यक्तव्य की सराहना की। वक्ताओं ने इस तथ्य की भी सराहना की कि अन्य क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं और नेताओं के साथ–साथ बड़े पैमाने पर लोग बी.एस.एन.एल. के कर्मचारियों को अपना समर्थन व्यक्त करने आए थे।

इसके बाद आमंत्रित वक्ताओं के भाषण हुए। (बॉक्स देखें)

कॉमरेड कृष्णा भोयर, महासचिव, महाराष्ट्र स्टेट इलेक्ट्रिसिटी वर्कर्स फेडरेशन (ए.आई.टी.यू.सी.) और संयुक्त सचिव, ऑल इंडिया इलेक्ट्रिसिटी वर्कर्स फेडरेशन; कॉमरेड श्याम नायर, जोनल सचिव, वेस्टर्न रेलवे, ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन (ए.आई.एल.आर.एस.ए.) और कॉमरेड पी.एस. सिसोदिया, केंद्रीय उपाध्यक्ष और निदेशक शिक्षा/ट्रेड यूनियन/उत्तरी रेलवे मजदूर संघ/एन.एफ.आई.आर. सहित कई लोगों ने अपने व्यक्तव्य रखे। वक्ताओं ने स्पष्ट रूप से अपने लोगों की खातिर निजीकरण के ख़िलाफ़ लड़ने की आवश्यकता और इस लड़ाई में लोगों को शामिल करने की आवश्यकता व्यक्त की। कई लोगों ने दृढ़ता से विचार व्यक्त किये कि उपभोक्ताओं के साथ–साथ सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के सभी कर्मचारियों का एकजुट संघर्ष समय की आवश्यकता है और इसके साथ ही हम निश्चित रूप से सरकार के सार्वजनिक और सरकारी क्षेत्रों के निजीकरण की नीति मज़दूर–विरोधी, जन–विरोधी और देश–विरोधी सरकार को रोक और उलट सकते हैं।

बैठक बहुत सकारात्मक वक्तव्य से साथ संपन्न हुई।

http://hindi.cgpi.org/21123

के.ई.सी. द्वारा पेश की गई प्रस्तुति की मुख्य विशेषताएं

हिन्दोस्तान का दूरसंचार क्षेत्र दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा दूरसंचार क्षेत्र है। इसके 118 करोड़ मोबाइल सब्सक्राइबर हैं। मोबाइल एप्लिकेशन डाउनलोड करने के मामले में भी हिन्दोस्तान दुनिया में दूसरे स्थान पर है। इसके 75 करोड़ इंटरनेट ग्राहक हैं और यह 2,70,000 करोड़ रुपये का वार्षिक राजस्व उत्पन्न करता है।

इसलिए देशी और विदेशी इजारेदारों की दिलचस्पी हिन्दोस्तानी बाज़ार में है।

- 1995 : में दूरसंचार क्षेत्र पूरी तरह से सार्वजनिक क्षेत्र में था लेकिन 2020 तक यह 90 प्रतिशत निजी हो गया है। यह क़दम दर क़दम किया गया है।
- 1985 : एम.टी.एन.एल. और वी.एस.एन.एल. का गठन करके दूरसंचार क्षेत्र का निगमीकरण शुरू हुआ था।
- 1991 : एल.पी.जी. (निजीकरण और उदारीकरण के माध्यम से वैश्वीकरण) की नीति शुरू की गई थी।
- 1994 : सरकार ने दूरसंचार क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोल दिया, लेकिन यह क्षेत्र ज्यादा निजी संचालकों को आकर्षित नहीं कर सका, क्योंकि सेवा प्रदाता और नीति निर्माता दोनों दूरसंचार विभाग था।
- 1995 : एयरटेल ने 2जी तकनीक के साथ परिचालन शुरू किया।
- 1997 : भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) का गठन किया गया जिससे कई बड़ी निजी कंपनियां इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकें।
- 1999 : एक नई राष्ट्रीय दूरसंचार नीति (एन.टी.पी.) की घोषणा की गई।
- 2000 : बी.एस.एन.एल. का गठन हुआ।
- 2002 : निजी कंपनियों को ग्राहकों को बुनियादी और सेलुलर सेवाएं प्रदान करने की अनुमति दी गई।
- 2008 : वी.एस.एन.एल. का निजीकरण किया गया और टाटा समूह को बेचा गया; 3जी तकनीक लाई गई।
- 2010 तक 15 से अधिक कंपनियों ने 3जी सेवाएं प्रदान कीं, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र का योगदान जानबूझकर कम किया गया। बी.एस.एन.एल. की बाज़ार हिस्सेदारी में 17 प्रतिशत की गिरावट आई जबकि कई निजी कंपनियां फलने–फूलने लगीं।
- 2012 : एन.टी.पी. को फिर से "एक राष्ट्र एक लाइसेंस" के रूप में संशोधित किया गया ताकि टाटा, बिड़ला, मित्तल आदि जैसे निजी खिलाड़ियों के लिए बाज़ार पर एकाधिकार करना आसान हो सके। 4जी तकनीक विभिन्न निजी कंपनियों द्वारा शुरू की गई लेकिन तत्कालीन सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी की सरकार ने बी.एस.एन.एल. को इस तकनीक से वंचित कर दिया।
- अब, जीयो द्वारा 5जी के लिए परीक्षण ही शुरू कर दिया गया है, जबकि बी.एस.एन.एल. द्वारा 4जी सेवा के रास्ते में अभी भी बाधाएं आ रही हैं।

2000 से 2020 तक, 16 निजी कंपनियों में से कई को बंद करने या विलय करने के लिए मजबूर किया गया, इसलिए अब केवल 3 बड़े निजी खिलाड़ी रह गए हैं। सितंबर 2020 की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, जीयो के पास 40 करोड़ ग्राहकों के साथ बाज़ार में 35 प्रतिशत हिस्सेदारी है, एयरटेल के पास 29 प्रतिशत हिस्सेदारी है और 32 करोड़ ग्राहक हैं, वोडाफोन और आईडिया के पास लगभग 29 करोड़ ग्राहकों के साथ 26 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। बी.एस.एन.एल. के पास 11 प्रतिशत हिस्सेदारी है और केवल 11 करोड़ ग्राहक बचे हैं।

शेष अगले पृष्ठ पर

के.ई.सी. की प्रस्तुति

पृष्ठ 7 का शेष

दो साल पहले, प्रतियोगिता को समाप्त करने और इजारेदारी बनाने के लिए जियो को लॉन्च किया गया था और इसने मुफ्त सेवाएं दीं जिससे अन्य निजी कंपनियों को भारी नुकसान हुआ। एयरटेल को 2019 से 2021 तक 63,000 करोड़ रुपये, वोडाफोन आईडिया को 2019 से 2020 तक 88,000 करोड़ रुपये और बी.एस.एन.एल. को 2018 से 2020 तक 38,000 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इन कंपनियों का 31 मार्च, 2020 तक कुल कर्ज़ बढ़कर 4.4 लाख करोड़ रुपये हो गया। परन्तु, इनमें से कोई भी निजी खिलाड़ी अपने स्वयं के पैसे का अधिक निवेश नहीं करता है, बैंकों से भारी ऋण लेता है, जो पहले से ही एन.पी.ए. बनने के ख़तरे में हैं।

बी.एस.एन.एल. के पास 2014 में 2,40,000 कर्मचारी थे, जिसे 2020 तक घटाकर 69,824 कर दिया गया है। अधिकारी 48,000 से घटकर 30,000 हो गए हैं और गैर–कार्यकारी कर्मचारी 1,60,000 से घटकर 40,000 हो गए हैं। इसी तरह एम.टी.एन.एल. में एग्जीक्यूटिव स्टाफ 5,000 से घटाकर 1,200 और नॉन एग्जीक्यूटिव स्टाफ 31,000 से घटाकर 5,000 से कम कर दिया गया है। इसलिए गैर–कार्यकारी कर्मचारियों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है।

सरकार बी.एस.एन.एल. को निजी कंपनियों को औने–पौने दामों पर बेचना चाहती है। सरकार की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार बी.एस.एन.एल. की कुल संपत्ति 1,46,758 करोड़ रुपये की है। लेकिन विभिन्न शहरों में अकेले बी.एस.एन.एल. के स्वामित्व वाली भूमि का मूल्य मौजूदा बाज़ार भाव के अनुसार 3 लाख करोड़ रुपये है। इसने देशभर में 7.5 लाख कि.मी. से अधिक ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क बिछाया है और यह 66,000 नेटवर्क टावरों की मालिक है। इस बुनियादी ढांचे को स्थापित करने में 15 साल से अधिक का समय लगा है।

इस स्थिति में सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम एक साथ आकर उन सभी पार्टियों को बेनकाब करें जिन्होंने अब तक शासन किया है और साथ ही इन निजी कंपनियों के इरादों को भी उजागर करें। वे जानबूझकर सार्वजनिक उपक्रमों के कर्मचारियों के बारे में झूठ फैला रहे हैं जिसे रोकने की ज़रूरत है। बी.एस.एन.एल. की स्थिति बिजली क्षेत्र की तरह ही है। सरकार ने उसके उचित कामकाज के लिए आवश्यक निवेश को कम कर दिया है। यह ग्राहक सेवाओं को प्रभावित करता है और फिर इस तरह से चित्रित किया जाता है जैसे कि श्रमिक आलसी हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र के सभी उपक्रम एक ही ख़तरे का सामना कर रहे हैं, इसलिए सभी को मिलकर लड़ने की ज़रूरत है। लोगों को यह भी समझाने की आवश्यकता है कि यह सार्वजनिक क्षेत्र ही है जो हमारे देश के दूरदराज़ के इलाकों में सेवाएं प्रदान करता है और सेवाओं के खराब होने का कारण यह है कि सरकार ने उनका वित्त पोषण करना बंद कर दिया है, क्योंकि सरकार उन क्षेत्रों का केवल निजीकरण करने में रुचि रखती है।

राष्ट्रीय दूरसंचार कर्मचारी फेडरेशन (एन.एफ.टी.ई.)–बी.एस.एन.एल. के महासचिव कॉमरेड चंद्रेश्वर सिंह के भाषण की मुख्य अंश

1994–95 में जब कांग्रेस सत्ता में थी, तब वह दूरसंचार क्षेत्र के तीन विभागों में से दो के निगमीकरण के उद्देश्य से एक विधेयक लाई थी। उस समय भाजपा जैसे विपक्षी दलों ने इसका विरोध किया था। हालांकि सन 2000 में सत्ता में आने पर, दूरसंचार सेवाओं और संचालन दोनों को भाजपा सरकार द्वारा निगमित कर दिया गया था।

निगमीकरण से पहले दूरसंचार सेवा और संचालन में कुल मिलाकर 3,50,000 कर्मचारी थे। श्रमिकों ने 3 दिनों तक विरोध किया और सरकार से एक लिखित समझौता किया कि इन कर्मचारियों को पेंशन मिलती रहेगी, उनके रोज़गार की रक्षा की जाएगी और सामाजिक रूप से आवश्यक दूरसंचार सेवाएं प्रदान करने का आर्थिक बोझ सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। लेकिन अब सरकार इन वादों से मुकर रही है।

1995 में निजी कंपनियों को दूरसंचार के क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी। सन 2000 में गठित बी.एस.एन.एल. को 2002 तक मोबाइल बाज़ार में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई थी। बी.एस.एन.एल. के कर्मचारी इसे देश में नंबर–एक की स्थिति में लाये। 2005 में पूर्ण लाभ (जब वह नंबर एक थी) 10,000 करोड़ रुपये था। बी.एस.एन.एल. 2007–08 तक मुनाफ़े में थी। केवल सरकारी नीतियों के कारण 2008 के बाद से वह घाटे में जाने लगी, क्योंकि सरकार ने उसके संचालन और विस्तार को प्रतिबंधित कर दिया था। बी.एस.एन.एल. को आवश्यक सेवाएं प्रदान करने के लिए मिलने वाले बहुत से धन को रोक दिया गया था। जिस दिन से बी.एस.एन.एल. की स्थापना हुई थी उस दिन से उसे कोई बजटीय समर्थन नहीं मिला। बी.एस.एन.एल. के गठन के समय 7,500 करोड़ रुपये दिए गए थे और सरकार ने कहा था कि वह पैसा वापस नहीं लेगी। लेकिन वादे की अनदेखी करते हुए बी.एस.एन.एल. से 14,000 करोड़ रुपये वापस ले लिए गए। इसके बावजूद बी.एस.एन.एल. के पास बैंक में 35 हजार करोड़ रुपये का सरप्लस था। कर्मचारी चिंतित नहीं थे और बिना तनाव के काम करते थे। वे उन जगहों पर पहुंचे जहां बिजली नहीं थी और उन्होंने टेलीफोन एक्सचेंज खोले। इन जगहों से संचालन की लागत को पूरा करने के लिए भी पर्याप्त राजस्व नहीं था। फिर भी, एक सार्वजनिक उपक्रम के रूप में बी.एस.एन.एल. ने ऐसे स्थानों पर भी संचार सेवा प्रदान करना अपना कर्तव्य समझा।

रिलायंस के जियो को सरकार उच्चतम स्तर से समर्थन कर रही है। यहां तक कि मौजूदा प्रधानमंत्री जियो के ब्रांड एंबेसडर भी बने जिसने अपना उत्पाद मुफ्त में दिया। नियमों के बावजूद, जियो को अपनी प्रचार योजना को तीन महीने से अधिक बनाए रखने की अनुमति दी गई थी।

बी.एस.एन.एल. के कर्मचारियों को सरकार से कोई समर्थन नहीं मिलने के बावजूद इसने "बी.एस.एन.एल. आपके दरवाज़े पर" के नारे के साथ जियो को अच्छी टक्कर दी। मज़दूरों ने घरों में जाकर लोगों को समझाया और जियो के हमले को रोकने की कोशिश की, चूंकि यह मुफ्त था इसलिए बी.एस.एन.एल. ने अपने ग्राहक आधार का एक अच्छा हिस्सा खो दिया।

श्री सेबेस्टियन के., महासचिव, संचार निगम कार्यकारी संघ (एस.एन.ई.ए.)–बी.एस.एन.एल. के भाषण के मुख्य अंश

दूरसंचार क्षेत्र में तेज़ी से तकनीकी परिवर्तन हुए हैं – एनालॉग से डिजिटल ट्रांसमिशन तक, 2008 में 2जी से 3जी तक और 2014 में 4जी तक और यह जल्द ही 5जी हो जाएगा।

दूरसंचार क्षेत्र में भारी निवेश किया गया है, जो बुनियादी ढांचा क्षेत्र के बाद दूसरे स्थान पर है। यह क्षेत्र सरकार को स्पेक्ट्रम शुल्क, लाइसेंस शुल्क, यू.एस.ओ. फंड और जी.एस.टी. व सेवाकर के रूप में लाखों करोड़ रुपये का भारी राजस्व प्रदान करता है। वहीं इस सेक्टर पर बैंकों का करीब 6 लाख करोड़ रुपये का कर्ज़ है जो उनके लिए बड़ी चिंता का विषय है।

बी.एस.एन.एल. का गठन सन 2000 में निजी संचालकों को समान अवसर प्रदान करने के लिए किया गया था। ऐसा कहा गया था कि एक अलग निगम के रूप में उसे व्यवसाय करने की अधिक स्वतंत्रता होगी, जो कि एक सरकारी विभाग के रूप में नहीं हो सकती थी। बी.एस.एन.एल. के गठन ने 3.5 लाख श्रमिकों के वेतन प्रदान करने की सरकारी देयता भी कम कर दी, जिन्हें बी.एस.एन.एल. में स्थानांतरित कर दिया गया था।

हालांकि निजी संचालकों को 1997 में मोबाइल सेवाएं शुरू करने की अनुमति दी गई थी, बी.एस.एन.एल. और एम.टी.एन.एल. को ऐसा करने की अनुमति नहीं थी। बी.एस.एन.एल. के कर्मचारियों ने दिल्ली उच्च न्यायालय में लड़ाई लड़ी, जिसने तब की सरकार को बी.एस.एन.एल. और एम.टी.एन.एल. को मोबाइल संचालन के लिए लाइसेंस प्रदान करने का आदेश दिया। इस क्षेत्र में उनके प्रवेश ने निजी कंपनियों को अपने टैरिफ को प्रतिकॉल 16 रुपये से कम करके 1 रुपये करने के लिए मजबूर कर दिया।

2000 से 2008 तक, बी.एस.एन.एल. ने कुल 43,976 करोड़ रुपये का लाभ दिया। परन्तु, सरकार ने वित्तीय वर्ष 2009 से इसके कामकाज में दखल देना शुरू कर दिया और इसे घाटे में चलने वाली कंपनी में बदल दिया। सरकार ने करोड़ों की निविदाओं को रद्द करना शुरू कर दिया, जिन्हें पहले ही अंतिम रूप दिया जा चुका था। सरकार ने ग्रामीण इलाकों में कार्यों के लिए बी.एस.एन.एल. को मुआवजा देना बंद कर दिया। ग्रामीण क्षेत्रों में अपने 18,000 एक्सचेंजों को बनाए रखने के लिए, उसे 4,000 करोड़ रुपये का प्रति वर्ष नुकसान होता है।

जब व्यापार फलफूल रहा था और अन्य संचालक प्रति माह लाखों कनेक्शन जोड़ रहे थे, बी.एस.एन.एल. के पास विकास के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी थी। वह सरकारी नीतियों, राजनीतिक हस्तक्षेप, 4जी स्पेक्ट्रम का आवंटन न होने, निर्देशक मंडल की नियुक्ति न करने और ख़राब प्रबंधन निर्णयों से प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ। बी.एस.एन.एल. के 30,000 करोड़ रुपये के राजस्व के बावजूद, 2013 से 2020 तक कोई वित्त निदेशक नहीं था!

बी.एस.एन.एल. को संचालन के लिए पिछले 19 सालों में सरकार की ओर से एक पैसा भी नहीं मिला है। सारा खर्च आंतरिक संसाधनों से पूरा किया जाता है। लगभग 65,000 कर्मचारी और उनके परिवार, साथ ही 2.5 लाख पेंशनभोगी बी.एस.एन.एल. पर निर्भर हैं। यह अप्रत्यक्ष रूप से 1.5 लाख लोगों को रोज़गार भी देता है। प्रमुख स्थानों पर बी.एस.एन.एल. की भूमि संपत्ति सरकारी किताबों में 1.15 लाख करोड़ रुपये से अधिक है, लेकिन बाज़ार मूल्य के हिसाब से उससे तीन गुना से ज्यादा है।

बी.एस.एन.एल. के कर्मचारियों द्वारा लगभग 3 वर्षों के बहुत संघर्ष के बाद, केंद्रीय मंत्रीमंडल ने 23 अक्तूबर, 2019 को बी.एस.एन.एल. के पुनरुद्धार योजना को मंजूरी दी। 4जी स्पेक्ट्रम का आवंटन प्रशासनिक रूप से 2016 की क़ीमत (14,155 करोड़ रुपये) पर इक्विटी निवेश के ज़रिए किया जाएगा।

जबकि अन्य सभी संचालकों को 2014 में विदेशी उपकरणों के साथ 4जी सेवाएं शुरू करने की अनुमति दी गई थी और 2017 तक उन सभी को अपग्रेड कर दिया गया था, मेक इन इंडिया नीति को केवल बी.एस.एन.एल. के लिए लागू किया गया, जिसके कारण 4जी संचालन शुरू नहीं किया जा सका, क्योंकि कोई भी भारतीय आपूर्तिकर्ता नहीं था!

बी.एस.एन.एल. और एम.टी.एन.एल. का अस्तित्व बहुत महत्वपूर्ण है। बी.एस.एन.एल. एक मजबूत टैरिफ नियामक के रूप में व्यवहार कर रहा है। बी.एस.एन.एल. के बिना ये निजी कंपनियां एक कार्टेल बना लेंगी और दर को बढ़ा देंगी।

कामरेड पी. कामराज, तमिलनाडु सर्कल के अध्यक्ष और सचिव, केंद्रीय मुख्यालय, नेशनल फेडरेशन ऑफ टेलीकॉम एम्प्लॉइज (एन.एफ.टी.ई.)–बी.एस.एन.एल. के भाषण के मुख्य अंश

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के कार्यक्रम की शुरुआत से ही देशी पूंजीपतियों के साथ काम करते हुए बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बी.एस.एन.एल. को निशाना बनाया गया था। 1984 में ही प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने फ्रांस के अल्काटेल के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए और इलेक्ट्रॉनिक सर्किट का आयात शुरू किया। इसने दूरसंचार विभाग में निजी प्रवेश शुरू किया। अगले साल उन्होंने आई.टी.आई. में सभी उत्पादन बंद कर दिये और सभी को फ्रैंचाइजी दे दी। इसके परिणामस्वरूप सभी प्रकार के दूरसंचार उपकरणों के लिए घटिया सामग्री की आपूर्ति हुई। 1984 से 2000 तक दूरसंचार क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निजी लूट हुई। एक कांग्रेसी मंत्री जो बाद में भाजपा में शामिल हो गया, हजारों करोड़ रुपये की लूट के साथ पकड़ा गया।

1991 से 2021 तक सरकार द्वारा निजी कंपनियों के लाभ की लालच को पूरा करने के लिए चार नई दूरसंचार नीतियां बनाई गईं। यूनियनों के संघर्षों ने उन नीतियों के कार्यान्वयन में देरी करने के लिए सरकार को मजबूर किया। दूरसंचार नीति के लिए 2012 की नीति को राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति के रूप में नामित किया गया था, न कि दूरसंचार नीति के रूप में। आज सब कुछ इंटरनेट पर आधारित है और लोग इसके बिना नहीं रह सकते। 135 करोड़ की आबादी में अब इंटरनेट की पहुंच 110 करोड़ लोगों तक है। पिछली कोरोना लहर के दौरान, डेटा का उपयोग कई बार बढ़ा। तीन निजी कंपनियों ने 92 प्रतिशत डेटा ट्रैफिक हड़प लिया। यहां तक कि जब बी.एस.एन.एल. जी.डी.पी. में बड़े पैमाने पर योगदान देता है, तब भी उसके पास जियो की तुलना में बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए पैसा नहीं है। जियो ने 5जी के विकास के लिए 6 लाख करोड़ रुपये निवेश किये हैं।

कोरोना के बाद जियो और एयरटेल ने सभी फ्रेंचाइजी को बंद कर दिया था। सब कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म के ज़रिए होता है। हालांकि, बी.एस.एन.एल. का देश के कोने–कोने में ग्राहकों की सेवा के लिए एक कार्यालय है। लोग बी.एस.एन.एल. के कर्मचारियों से आमने–सामने बात कर सकते हैं और यह फर्क़ है निजी कंपनियों और बी.एस.एन.एल. के बीच।

10,000 करोड़ रुपये से अधिक ग्रामीण मुआवज़े के लिए सरकार के पास रुपये बकाया हैं। बी.एस.एन.एल. ग्रामीण क्षेत्रों में कई सरकारी कार्यालयों के साथ–साथ ए.टी.एम. और बैंकों के कामकाज के लिए आवश्यक है। बी.एस.एन.एल. ग्रामीण लाइनों को बहुत कठिनाइयों और राजस्व के नुकसान के बावजूद बनाए रख रहा है फिर भी सरकार बी.एस.एन.एल. का समर्थन नहीं कर रही है।

बी.एस.एन.एल. की निविदाओं को कई बाधाओं और अदालती मामलों का सामना करना पड़ता है। बी.एस.एन.एल. अपने समर्पित कार्यबल के कारण ही अब तक जीवित है।

टेलीकॉम के क्षेत्र में 32 संचालक हुआ करते थे। उनमें से ज्यादातर ख़त्म हो गए हैं लेकिन बी.एस.एन.एल. 10 प्रतिशत की बाज़ार हिस्सेदारी और 11 प्रतिशत की राजस्व हिस्सेदारी के साथ खड़ा है। इसे 4जी तकनीक से वंचित रखा गया था जबकि रेलवे को 5जी तकनीक दी गई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि निजी ट्रेन संचालक अपनी गाड़ियों और सिग्नलिंग व्यवस्था को चलाने के लिए इस तकनीक का उपयोग करना चाहते हैं। उनकी पैरवी के कारण, रेलवे को सबसे पहले 5जी आवंटित किया गया है।

पूरे टेलिकॉम क्षेत्र पर 7.74 लाख करोड़ रुपये का कर्ज़ है। लेकिन बी.एस.एन.एल. के पास सिर्फ 24 करोड़ रुपये का कर्ज़ है। हर दूसरे निजी संचालक पर 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का कर्ज़ है।

सरकार बी.एस.एन.एल. को सहायता करने के बजाय जियो को समर्थन दे रही है। नई दिल्ली में नॉर्थ ब्लॉक और साउथ ब्लॉक के सचिव से लेकर नीचे तक के सभी अधिकारियों को जियो कनेक्शन दिए गए हैं।

दुनिया के बाकी हिस्सों की तुलना में, हमारे देश में बी.एस.एन.एल. की वजह से डेटा सस्ता है। बी.एस.एन.एल. हर साल लोगों के लिये सेवाओं को बनाए रखने के लिए लड़ रहा है और जीवित रहने के लिए लड़ रहा है। बी.एस.एन.एल. के बिना, कार्टेल दर को नियंत्रित नहीं किया जा सकेगा और आम लोग इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। रेलगाड़ियों के साथ जो हो रहा है वह टेलीकॉम के साथ भी होगा।

लोगों के कल्याण के लिए सभी सार्वजनिक उपक्रमों को संरक्षित किया जाना चाहिए।

भारत संचार निगम लिमिटेड के निजीकरण का विरोध करते हुए कोलकाता में बी.एस.एन.एल. के मज़दूर

रंजन दानी, महाराष्ट्र सर्कल सचिव, नेशनल फेडरेशन ऑफ टेलीकॉम एम्प्लॉइज (एन.एफ.टी.ई.)–बी.एस.एन.एल. के भाषण के मुख्य अंश

आज निजी क्षेत्र ने जो कुछ भी हासिल किया है, वह सार्वजानिक क्षेत्र के समर्थन से ही किया है। फिर भी, प्रधानमंत्री ने खुले तौर पर राष्ट्र को घोषित किया है कि अंत में सार्वजनिक उपक्रमों का समाप्त होना तय है।

1994 से 1999 की दूरसंचार नीति ने स्पष्ट रूप से दूरसंचार में सरकार के बजाय निजी कंपनियों की इजारेदारी को बढ़ावा दिया है। इसके बाद सभी सरकारों ने बी.एस.एन.एल. के निजीकरण के लिए काम किया है।

विश्व बैंक और आई.एम.एफ. ने विभिन्न नीतियां जारी की हैं जिन्हें सरकार ने स्वीकार किया है। उनके एक प्रवक्ता ने यह भी सुझाव दिया है कि यदि आवश्यक हो तो तीसरी दुनिया के देशों के संविधानों को बदला जा सकता है। प्रतिस्पर्धा के बहाने, उन्होंने जो नीतियां निर्धारित की हैं और जिनका पालन हिन्दोस्तान में सरकारों ने लगातार किया है, उन्होंने सार्वजनिक उपक्रमों को नष्ट करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

विश्व बैंक और आई.एम.एफ. चाहते थे कि हिन्दोस्तान की सरकार 2007 तक दूरसंचार कारोबार से बाहर हो जाए। यह गर्व की बात है कि 2021 में भी बी.एस.एन.एल. मौजूद है। सरकार ने इसे बंद करने की योजना बनाई थी, लेकिन अधिकारियों और कर्मचारियों के कड़े विरोध के कारण ही सरकार ऐसा नहीं कर सकी है। बी.एस.एन.एल. के लिए सरकार ने पुनरुद्धार पैकेज के तहत 80,000 कर्मचारियों को वी.आर.एस. दिया है, जो वास्तव में छंटनी थी। सरकार ने 80,000 श्रमिकों की छंटनी को यह दावा करते हुए जायज़ ठहराया है कि इसका नुकसान उनके वेतन के कारण हुआ है।

अब, एक आउटसोर्सिंग मॉडल पेश किया गया है। यह मॉडल कनेक्शन बनाए रखने और ग्राहकों को उचित सेवाएं देने में पूरी तरह विफल रहा है। एक अकेला कर्मचारी अब 4 कर्मचारियों का काम संभाल रहा है। पुनर्जीवन पैकेज में कई चीजों का वादा किया गया था लेकिन हालत इतनी खराब है कि कर्मचारियों को समय पर वेतन भी नहीं मिल रहा है।

हमने कोविड के दौरान इंटरनेट सेवाओं के लिए 1 लाख फाइबर ऑप्टिक कनेक्शन दिए हैं। हमारे पास पूरे देश में 8 लाख किलोमीटर फाइबर ऑप्टिक्स नेटवर्क है। सभी निजी संचालकों को मिलाकर, उनके पास केवल 4 लाख किलोमीटर है! इसलिए अगर हमें इस बाज़ार में काम करने की अनुमति दी जाती है, तो हमें आसानी से बाज़ार का एक बड़ा हिस्सा मिल सकता है। लेकिन इंटरनेट सेवाओं के लिए सरकार उसी मॉडल का अनुसरण करती है, जो निजी कंपनियों द्वारा अपनाया जाता है। टेलीकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोवाइडर्स (टी.आई.पी.) को अंतिम उपयोग के लिए ऑप्टिक फाइबर, वायरलेस टावर और कनेक्शन जैसे बुनियादी ढांचे को बिछाने का काम निजी कंपनी को उप–अनुबंध पर देते हैं या फ्रैंचाइजी को देते हैं। बी.एस.एन.एल. भी यही प्रथा अपना रहा है जिसके परिणामस्वरूप कर्मचारियों की संख्या में भारी कमी आई है। बी.एस.एन.एल. द्वारा एक दोषपूर्ण नीति का पालन किया जा रहा है क्योंकि कभी भी टी.आई.पी. अपने बुनियादी ढांचे को निजी कंपनियों में बदल सकते हैं, जो उन्हें उच्च दर की पेशकश कर सकते हैं।

बी.एस.एन.एल. का काम सिर्फ मुनाफ़ा कमाना नहीं है। उसने जम्मू–कश्मीर और केरल में बाढ़ के दौरान और कई अन्य स्थानों पर उपग्रहों के माध्यम से लोगों की मदद की है। श्रमिकों को न केवल अपने वेतन के लिए बल्कि इस देश को बचाने के लिए, जनता को किफ़ायती इंटरनेट प्रदान करने के लिए, दूरसंचार की गोपनीयता बनाए रखने के लिए, अच्छा रोज़गार प्रदान करने के लिए बी.एस.एन.एल. को बचाना होगा।

मज़दूर एकता लहर

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट मज़दूर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का अख़बार

RNI No.- 45893/86 Postal Regd. No. DL(S)-01/3177/2021-23

LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT. U (SE)-38/2018-20

Posting Date at DLPSO, 1 & 2 Aug, 2021 Date of publish - 1 Aug, 2021

To .....
.....
.....
.....
.....
.....

स्वामी लोक आवाज़ पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक मधुसूदन कस्तूरी की तरफ से, ई–392 संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस–2, नई दिल्ली 110020, से प्रकाशित। प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, 21ए, झिलमिल औद्योगिक क्षेत्र, शहादरा, दिल्ली से मुद्रित। संपादक– मधुसूदन कस्तूरी, ई–392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस–2, नई दिल्ली 110020। email : melpaper@yahoo.com, mazdoorektalehar@gmail.com, Mob. 9810167911

अवितरित होने पर इस पते पर वापस भेजें : ई–392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस–2, नई दिल्ली 110020

WhatsApp 9868811998

ई.डी.एस.ओ. के ख़िलाफ़ प्रदर्शन

पृष्ठ 1 का शेष

और सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य प्रमुख उद्यमों के निजीकरण की दिशा में उठाये जा रहे क़दमों की कड़ी निंदा की, उन्होंने इसे बड़े इजारेदार पूंजीपतियों के हितों में और हम लोगों के हितों के ख़िलाफ़, एक क़दम बताया। सभी सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में मज़दूरों को निजीकरण के ख़तरे का सामना करना पड़ रहा है और सभी मज़दूरों को अपनी आजीविका और अपने मूलभूत अधिकारों पर बढ़ते हमलों का सामना करना पड़ रहा है,

उन्होंने हाल ही में पारित चार श्रम संहिताओं का उदाहरण देते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि ये मज़दूर–विरोधी क़दम, मज़दूरों को उनके उन अधिकारों से वंचित करना चाहते हैं, जिन अधिकारों को मज़दूरों ने इतने कठिन संघर्षों और कुर्बानियों के द्वारा हासिल किया है। उन्होंने निजीकरण का विरोध करने के लिये तथा आजीविका और अधिकारों पर बढ़ते हमलों का मुक़ाबला करने के लिए, प्रत्येक उद्योग के मज़दूरों और देश के सभी हिस्सों के कामगारों को एकजुट होकर इस सांझे संघर्ष में जुड़ने का आह्वान किया।

http://hindi.cgpi.org/21157

रेल चालकों ने निजीकरण के विरोध में काला दिवस मनाया

15 जुलाई, 2021 को भारतीय रेल के चालकों ने ऑल इण्डिया लोको रनिंग स्टॉफ ऐसासिएशन (ए.आई.एल.आर.एस.ए.) के बैनर तले देशभर में विरोध प्रदर्शन किया। रेलवे के विभिन्न मंडलों की अलग–अलग लाबियों – बनारस, गोरखपुर, मऊ, छपरा, लखनऊ, बरेली, इलाहाबाद, हाजीपुर, सोनपुर, मुज्जफरपुर और बारौनी आदि पर विरोध प्रदर्शन किये गए। कई जगहों पर रेलवे प्लेटफार्मों पर जुलूस निकाले गये, जिनमें महिला रेल चालकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

रेल चालकों ने भारतीय रेल में हो रहे निजीकरण का विरोध करने तथा अपनी लंबित मांगों को पूरा करवाने के लिये इस विरोध प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया था। विरोध प्रदर्शन का यह अभियान ए.आई.एल.आर.एस.ए. की केन्द्रीय कार्यकारिणी के फ़ैसले के अनुसार किया गया था। कार्यकारिणी की ओर से आह्वान किया गया था कि 10 जुलाई से 15 जुलाई तक विरोध सप्ताह मनायेंगे और सभी चालक अपनी–अपनी लाबियों पर इस प्रकार के विरोध प्रदर्शन करेंगे। 15 जुलाई को काला दिवस मनाते हुये विरोध प्रदर्शन करेंगे। रेलमंत्री को अपनी मांगों के समर्थन में अपने हस्ताक्षर के साथ पत्र भेजेंगे।

रेल चालकों ने अभियान बतौर अन्तर्देशीय पत्र पर अपनी जायज़ मांगों के समर्थन में हस्ताक्षर करके रेलमंत्री जी को भेजे। इस अभियान को पूरे देश के रेलवे मुख्यालयों – फुलेरा, जयपुर, बांदीकुई, अनारा, आदि पर आयोजित किया।

केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य कामरेड रामसरन ने बताया कि सरकार भारतीय रेल के निजीकरण पर आमादा है, लेकिन रेल चालक अपने संघर्ष पर अडिग हैं। रेलवे में हजारों पद खाली पड़े हैं लेकिन सरकार इन पदों पर भर्ती करने की बजाय, मौजूदा कर्मचारियों का अति शोषण कर रही है। हमारी मांग है कि सभी रिक्त पदों को तुरंत भरा जाये। रेल चालकों की लम्बे समय से लंबित और वर्तमान मांगों को पूरा किया जाये।

सभी लाबियों पर रेलवे अधिकारियों को मांगपत्र सौंपे गये।

मांगपत्र में दी गई मुख्य मांगें हैं :

1. रेलवे का निजीकरण बन्द किया जाए।
2. श्रम कानूनों में किये गये संशोधन को वापस लिया जाए।
3. टूल बॉक्स के बदले ट्राली बैग देना बंद किया जाए।
4. एन.पी.एस. को समाप्त करके पुरानी पेंशन योजना को लागू किया जाए।
5. महंगाई भत्ता और राहत भत्ता (डी.आर.) फ्रीज करने के आदेश को रद्द किया जाए।
6. नाईट ड्यूटी अलाउएंस (एन.डी.ए.) की सीलिंग को समाप्त करते हुए, सभी रनिंग कर्मचारियों को एन.डी.ए. का भुगतान किया जाए।
7. कोविड–19 महामारी में घोषित लॉकडाउन की अवधि के दौरान रनिंग स्टॉफ को मूल वेतन का 30 प्रतिशत किलोमीटर रनिंग भत्ता बतौर भुगतान किया जाए क्योंकि गाड़ियों को चलना रुक गया था।
8. 9 घण्टे से ज्यादा की ड्यूटी लेना बन्द किया जाए।
9. 36 घण्टे में मुख्यालय पर वापसी को सुनिश्चित किया जाए।
10. सवारी गड़ियों के चालक से मालगाड़ी का परिचालन बन्द किया जाए।
11. लॉकडाउन में फंसे रेल चालकों, सहायक रेल चालकों को रेलवे के आदेश के तहत विशेष आकस्मिक अवकाश दिया जाए।
12. रिक्त पदों को तत्काल भरा जाये।

http://hindi.cgpi.org/21129